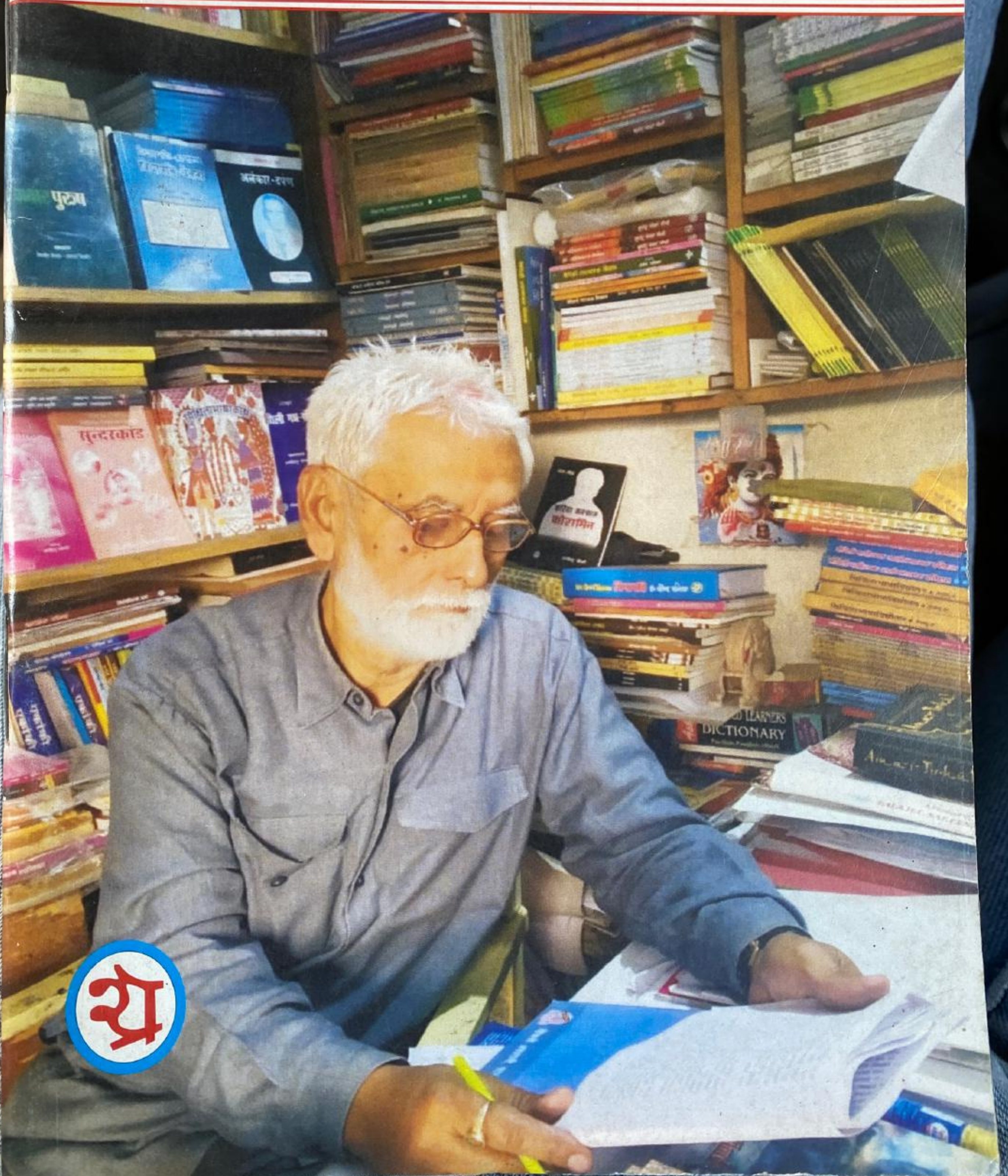
शरदिन्दु चौधरी

बात-बातपर बात

संस्मरणात्मक निबंध



बात-बातपर बात

बात-बातपर बात

(संस्मरणात्मक निबंध)

खंड-1

शरदिन्दु चौधरी



शेखर प्रकाशन

पटना

ISBN : 978-81-940269-1-4

प्रकाशक : शेखर प्रकाशन,
2A/39, टेक्स्ट बुक कालोनी
इन्द्रपुरी, पटना-800024

प्रथम संस्करण : 2019

प्रति : 300

मूल्य : 75 टाका मात्र

शब्द संयोजन : अजय कुमार

आवरण फोटो : मुकुन्द मयंक

मुद्रक : अक्षर प्रिन्टर्स
दरियापुर, पटना

BAAT-BAATPAR BAAT

BY

SHARDINDU CHAUDHARY

हमर बातक श्रृंखला...

'बात-बातपर बात' मोनमे उठैत विभिन्न तरहक बात सभ थिक जे जीवनमे विभिन्न समयमे हमरा संग घटित भेल । बहुत बात लोक बिसरि जाइत छैक बहुत बात कोनो-कोनो बात उठलापर सहसा स्मरण भऽ उठैत छैक । किछु बात मोनमे अनेक प्रकारक प्रश्नकेँ उठबैत रहैत अछि मुदा ओकर सम्यक उत्तर नहि भेटलापर ओ बाहर निकलि पड़ैत अछि । एही सभ तरहक बात एहिमे अछि ।

किछु बात एहन होइत अछि जे बेर-बेर मोनमे उठैत अछि ओहिना जेना कोनो वस्तुक विज्ञापन बेर-बेर आकर्षित करैत छैक । हमरो मोनकेँ किछु बात बेर-बेर विज्ञापने जकाँ आकर्षित करैत रहैत अछि तेँ कतबो रोकलापर ओ चाहे तँ गप्पक क्रममे बाहर आबि जाइत अछि वा लेखनमे बेर-बेर आबि जाइत अछि । हमरा बुझने एहन बातकेँ रोकबाको नहि चाही आ विज्ञापने जकाँ बेर-बेर सोझाँ अनबाक चाही । भऽ सकैछ एहि सँ किछु लाभ भऽ जाय जँ ओ विसंगतिमूलक हो । तेँ किछु बात बेर-बेर सोझाँ आबि सकैत अछि ।

बातक एहि क्रममे बहुतो गोटे हमरा समक्ष अयलाह अछि जनिक हम पूर्ण सम्मान करैत छियनि मुदा प्रवृति जतऽ दुष्प्रवृति बनि प्रगट भेल हो ओतऽ हमर बात कने कटु अवश्य भऽ गेल अछि । हँ, हम अपन बात सँ हुनका अपमानित नहि करय चाहैत छियनि अपितु मात्र एकटा प्रश्न ठाढ़ करय चाहैत छियनि ।

हमर बात सभ मुख्यतया अथवा पूर्णतया सत्यपर आधारित अछि तेँ किछु गोटेकेँ अप्रिय अवश्य लगतनि मुदा ई सत्य किछु गोटेकेँ प्रिय सेहो लगतनि । हँ, जिनका अप्रिय लागनि से अवश्ये अपन छातीपर हाथ राखि सोचथि जे हम कतहु सत्यसँ दूर तँ नहि ने भेल छी ।

मस्तिष्क कखनो शान्त नहि रहैछ । हरदम ओकरा समक्ष कोनो

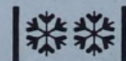
ने कोनो बात अबिते रहैत छैक तेँ हम सोचलहुँ जे जे बात सभ पकड़ाइत अछि छोट-छोट टुकड़ीक रूपमे तकरा किएक ने प्रकट करी। मुदा जेँ कि प्रकाशन व्यय अत्यधिक भऽ गेल छैक तेँ हम ई निर्णय कयलहुँ जे एकरा अनेक खंडमे प्रकाशित करी । एहिसँ लाभ ई होयत जे जे बात जहिया स्मरण होयत से तहिया प्रकट होयत, तेँ एहिमे हमर जीवनक क्रमबद्धताक उल्लेख नहि होयत । जेँ ई सभटा बातक रूपमे प्रकट होयत तेँ एकरा बाते बूझल जाय ।

हँ, अपन बातक एहि श्रृंखला लेल हम पुनः ओहि मैथिल बन्धु लोकनिक आभारी छियनि जे अपन-अपन व्यक्तित्वक विभिन्न रूपसँ हमरा प्रेरित करैत रहैत छथि आ हम सक्रिय रहैत छी ।

फगुआ - 21/03/2019 —शरदिन्दु चौधरी



विषय–क्रम



मैथिली-भाषा, साहित्य आ प्रकाशन

हम लगभग चालीस वर्षसँ मैथिलीमे समय दऽ रहल छी मुदा सक्रियता, जे हमरा एक नव बाट देखौलक, से आयल 1991-92 सँ। एकर मूलमे अछि अपन जीवन-यापनक समस्या । 1991मे शेखर प्रकाशन जन्म लेलक आ हम मैथिलीक भऽ कऽ रहि गेलहुँ से आइ धरि हुनके भरोसे जीवन खेपि रहल छी ।

एही 25-26 वर्षमे मैथिलीकेँ ततेक लगसँ देखलहुँ जे अपन ज्ञानक विस्तार कऽ सकलहुँ । सभसँ पहिने मैथिलीक साहित्यकारकेँ देखलियनि, फेर मैथिलीक प्राध्यापककेँ देखलियनि आ संगहि संग मैथिलीक सामाजिक संगठन आ आन्दोलनकर्ताकेँ सेहो देखलियनि । मैथिलीक क्रेता आ विक्रेताक तँ ततेक विविध रूप देखलहुँ अछि जे ओ सूतलोमे चेता जाइत छथि । मुदा मैथिलीक विद्यार्थीक रूप जे हमरा सोझाँ आयल से हमरा अपन गुलाम बना लेलक । आ ई गुलामीयेक परिणाम अछि जे हम मैथिलीमे भाषा आ साहित्यक अन्तरकेँ अपन मानसपटलपर बसा कऽ काज करय लगलहुँ ।

मैथिली पहिने सीखल आ पढ़ल जाइत अछि आ तकर बाद साहित्य रचल जाइत अछि । साहित्य वैह पढ़ि सकैत अछि जकरा मैथिली भाषाक ज्ञान होइक । तेँ हमरा बुझने पहिने मैथिली सीखयबाक प्रयास होयबाक चाही तखन पढ़यबाक । जे मैथिली सीखि लेत से स्वयं मैथिली पढ़यमे रुचि लेबय लागत । मुदा आब तँ एक डेग बढ़ि ईहो कहल जा सकैछ जे जे मैथिल नहियो अछि सेहो मैथिली सीखि-पढ़ि जीवन-पथ पर आगाँ बढ़य चाहैत अछि । जय हो मैथिलीक जे ओकर ई सुदिन आयल । मुदा एहि सुदिनोमे मैथिल प्रवृति अपन चालि नहि छोड़लक । अधिकांश मैथिलक कहब जे अछि जे गैर-मैथिल मैथिलीकेँ आगाँ नहि बढ़य दैत अछि । हमर मान्यता एहिसँ एकदम विपरीत अछि। मैथिले मैथिलीक

बाधक अछि–दुनू स्तरपर, भाषाक स्तर पर आ साहित्यक स्तर पर ।

अधिकांश मैथिल मैथिली भाषाक प्रयोग छोड़ि चुकल अछि, ने पढ़ैत अछि आ ने लिखैत अछि, मात्र भाषण दैत अछि । ई कोनो मिथ्या आरोप नहि अछि, देखबाक हो तो हुनक परिवारमे देखू, हुनक रोजमर्राकेँ देखू आ जँ बेसी बुझबाक हो तँ भाषणकर्ताक साहचर्यमे रहि कऽ देखू, स्थिति स्पष्ट भऽ जायत । रहल साहित्यक बात तँ ओ ओतबेमे सिमटल अछि जते क्षेत्रमे साहित्यकारक परिधि छनि । वैह लिखताह, वैह पढ़ताह आ वैह बिक्रेता बनि पोथी बेचबाक असफल प्रयासो करताह । साहित्यकार लिखैत जयताह, तथाकथित प्रकाशकगण पोथीक पथार लगबैत जयताह मुदा दूनूमे सँ किनको ई सोह नहि छनि जे ई पोथी के पढ़त ? साहित्यकार आ प्रकाशक दुनूक दायित्व छनि जे ओ पाठकक संख्या निरंतर बढ़य से सोचथि मुदा स्थितिपर काज करबाक पलखति किनको नहि छनि । खास कऽ प्रकाशककेँ ई ध्यान देबाक चाही जे कोन प्रकारक प्रकाशनसँ पाठकक संख्या बढ़यबाक संगहि ओकरा सेहो आगाँ बढ़ाओल जा सकय । हमर संकेत अछि ओहन पाठक दिस जे मैथिली पढ़ि आगाँ बढ़ि सकय ।

आइ मैथिली पढ़ि पैघसँ पैघ पद प्राप्त कयल जा सकैछ । सरकार ई सुविधा 2005 सँ देने अछि । छोट पदपर जयबा लेल सेहो मार्ग खुजि गेल अछि । शिक्षकक परीक्षामे, रेलवेक परीक्षामे एवं अनेक ठाम अनुवादक पदक परीक्षामे मैथिली भाषाक प्रवेश भेल अछि । एकर जनतब मैथिल बुद्धिजीवी, साहित्यकार, मैथिलीक प्रकाशक आ मैथिल समाजसेवीकेँ छनि । मुदा एहि कोटिक परीक्षार्थी लेल के आ कतऽसँ ठाढ़ छथि से ताकल जयबाक चाही । ई कहब जे सैकड़ेक मात्रामे पोथी छपि रहल अछि ताहिसँ ककर उद्धार होयत आ भऽ रहल अछि से सोचल जयबाक चाही । बेटा जनमल तँ थारी पीटऽ लगलहुँ आ बेटा अलोल-बनोल भऽ गेल, बजारमे नहि ठठल तँ समाजकेँ उधेसऽ लगलहुँ । एहिसँ की मैथिली बढ़ि जयतीह । समाज बढ़त !

शीर्ष नेतृत्वसँ उमेद कयल जाइछ जे ओ काज करयवलाकेँ

सार्थक निर्देश दिअय, प्रोत्साहित करय, समाजोन्मुखी बात करय, खास कऽ ओहन व्यक्तित्वसँ जे पैघ-पैघ पाठ्यक्रमक पैनेलमे होअय, तनिकासँ तँ आर बेसी उपयोगी मार्ग प्रशस्त करबाक आशा रहैछ ने की गुटबाजीकेँ प्रश्रय दैत कोनो संस्थाकेँ व्यक्तिगत घोषित करब आ ककरो निर्झरिणीक संज्ञा दऽ पांतीक पांतीक गढ़ि मुलम्मा चढ़ायब। मूल्यांकन काजक होइत छैक संख्याक नहि। संख्याबलपर देशमे-प्रदेशमे कतेक प्रतिशतपर सरकार चलि रहल अछि, हमसभ जनैत छी, की भाषा आ साहित्योमे एहने प्रतिशत देखा कऽ मूल्यांकन होयत।

ओना ई सभ बाधा विघ्न, हमरा जीवनमे जतेक बेर कोनो नीक काज करैत छी, अबैत अछि मुदा हमर काज चलैत रहैत अछि। हम ओहन प्रकाशक छी जे दर्जनो लेखकक किताब अपन पूंजीसँ छापि सम्मान कयने छियनि जे हमर गोत्र-मूलक नहि छथि। दर्जनो एहन लेखक छथि जनिका आंशिक मदति कयने छियनि आ लगभग 40 टा सँ बेसी पर तँ शेखर प्रकाशनक कापीराइट छैक। की मैथिलीक आन प्रकाशक एहि व्याजें अनकर पोथी प्रकाशित कऽ रहल छथि। नहि। कापी राइट लेखकक, मुद्रक क्यो आन तखन प्रकाशकक लेबल टा लगा कऽ टाका कमयबाक व्योंत के के धरा रहल छथि, ईहो देखल जयबाक चाही। जे-से, बहुत बात आनो ठाम लिखने छी तेँ बातकेँ आगाँ बढ़ाबी।

भाषाक विकास लेल विद्यार्थी आ मैथिली पाठ्यक्रमक अनुरूप पोथी छापल जयबाक चाही। एतऽ हमर अभिप्राय ई नहि अछि जे भाषा विज्ञान विषये टा, नहि, भाषा विस्तार लेल ओ सभ पोथी आवश्यक अछि जे कोनो ने कोनो पाठ्यक्रममे अछि। जँ मैथिलीक पांचो टा प्रकाशक छथि तँ किएक ने पाठ्यक्रमक पोथी छापल जाइत अछि। मैथिलीक पाठ्यक्रमक पांचो-पांचो टा पोथी छापल जाइत तँ विद्यार्थी वर्गक कल्याण होइत आ ई कलंक जे पाठ्यक्रमक पोथी नहि भेटैत अछि सेहो नहि लगैत। आइ पाठ्यक्रममे लागल अनेक 'अक्षरपुरुष'क पोथी उपलब्ध नहि अछि, एहिपर के सोचत ? 'शेखर प्रकाशन जे व्यक्तिगत

स्तरपर काज करैत अछि ? अथवा सामाजिक स्तरपर काज करयवला वा सहयोग समिति बना कऽ काज करयवला प्रकाशन करत । ईहो सभ भाषाक विकासपर बात करयवला विद्वान-बुद्धिजीवीकेँ सोचबाक चाहियनि।

मैथिलीक दुर्भाग्य छैक जे सुदिनोमे आ दुर्दिनोमे अनेक खूट्टा गाड़ल जाइत अछि जतऽ बैसिकऽ पाउज करयमे लोककेँ नीक लगैत छैक, काज करयमे नहि । मुदा उपलब्धि धरि सभटा हुनके नामे होइन से चिन्ता धेने रहैत छनि । हम मानैत छी जे सभ खुट्टा, सभ गोलक महत्व छैक मुदा समाजकेँ कतेक ओहिसँ भेटैत छैक, भाषाकेँ कतेक भेटैत छैक सेहो आंकल जयबाक चाही । भाषाक विस्तारक काज साहित्य-सृजनसँ बेसी महत्वपूर्ण छैक । साहित्य भाषाक एकटा अंग छैक, आन अंग जँ निष्क्रिय रहतैक तँ ओ कतेक काज कऽ सकैछ से सहजे बूझल जा सकैछ । दू चारि वर्षक भीतर सी.बी.एस.सी. मे सेहो मैथिली आबि जायत तकर तैयारी के करत ! टी.इ.टी.मे मैथिली शामिल अछि तकर तैयारी केहन भेल अछि से सभ देखि रहल अछि । हम पैनेलमे आबी, हम प्रश्नपत्रक 'सेटर' होइ, हम कॉपी जाँची, हम एक्स्टर्नल होइ, मॉडरेटर होइ, जूरी होइ, पुरस्कार भेटय, सम्मान भेटय एहि सभ लेल दौड़-बरहा करब, पैरवी करब, खर्च करब मुदा भाषाक विस्तार लेल विद्यार्थीकेँ पोथी भेटय तकर चाँकि नहि। जे विद्वान, जे साहित्यकार, जे समाजसेवी छथि तनिका मैथिली रोजगारोन्मुखी भऽ गेल अछि सेहो देखबाक चाहियनि ।

सन 2007 सँ हम मैथिलीक विद्यार्थीक सेवामे निरंतर लागल छी । जतेक आर्थिक ताकत अछि से एहिमे झोंकने छी । परिणामक सोच नहि अछि । प्रसन्नता एहि बातक अछि जे लगभग सभ जिलामे एहि अल्प वर्षमे मैथिली पढ़ि कऽ कैकटा अधिकारी कार्यरत छथि । ई संख्या निरंतर बढ़ैत रहय सैह हमर आकांक्षा, लक्ष्य, उद्देश्य जे कही, सैह अछि । जतेक विद्यार्थी सफल होयताह तँ हम सफल होयब। एक-एक पोथीक चारि-चारि संस्करण होयब हमरा लेल एकटा उपलब्धि अछि । जतेक संस्करण ततेक मेडल हमरा भेटल से हम मानैत छी, जेना

हमर प्रकाशन व्यक्तिगत अछि तहिना ई मेडल सेहो व्यक्तिगत अछि । विद्यार्थीक सेना जेना हमर पोथी लूटि (कीनि) लैत अछि ताहिसँ हम अभिभूत छी । हमरा एकोरत्ती कचोट नहि अछि जे हम मैथिली साहित्यक सेवक नहि छी । हमरा गर्व अछि जे हम मैथिली भाषाक सेवक छी । हँ, एतय एकटा बात अवश्य स्पष्ट करय चाहब । ई हमर दुर्भाग्य अछि जे एते मात्रामे पोथी बेचलोपर आर्थिक रूपेँ सम्पन्न नहि भऽ सकलहुँ आ कन्यादान करबा लेल पिता द्वारा कीनल जमीने बेचब विकल्प रहल अछि ।

हम केहन व्यवसायी छी से सहजे अनुमान लगाओल जा सकैछ । व्यवसायी ओ होइछ जे व्यवसायमे लागल टाका गाहकसँ असूली कऽ सकय । ई हमरासँ नहि भऽ पबैत अछि । काज करैत-करैत मुँह सुखा जाइत अछि तँ मुँहसँ मधु कोना चुअत । हँ, मधु चुआबऽ वला लोक सभ हजारो टाका डूबबाबऽ लेल हमरा लग रहरहाँ आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि आ हम मात्र ओकर मुँह देखैत रहि जाइत छी ।

25/8/2018



मैथिली पत्रकारिताक सत्य

वर्तमान समयमे पत्रकारिता एकटा एहन सशक्त विधाक रूपमे काज कऽ रहल अछि जकरासँ समाजक कोनो क्षेत्र वंचित नहि अछि । दोसर शब्दमे इहो कहल जा सकैछ जे पत्रकारिता आब संवाद सेतुक रूपमे सूचना देबऽ वला तंत्र, विकृतिकेँ उजागर करयवला यंत्र तथा प्रभावीसँ प्रभावी व्यक्तित्वक नीति, कार्यप्रणाली तथा दल विशेषकेँ प्रभावित करयवला मंत्र सेहो बनि गेल अछि । हमर कहबाक तात्पर्य ई अछि जे पत्रकारिता समाजकेँ प्रभावित करयवला एकटा सशक्त माध्यम बनि गेल अछि । एहि परिप्रेक्ष्य मे जँ मैथिली पत्रकारिताक बात कयल जाय तँ स्पष्ट रूपसँ कहल जा सकैछ जे मैथिल समाजक पटु व्यक्तित्व एहि विधाक विकास नहि होमऽ देबय चाहैत छथि किएक तँ ओकर पहिल ग्रास वैह बनि जयताह से ओ जनैत छथि ।

जाहि बातकेँ एतय हम उठा रहल छी से कोनो नव बात नहि अछि अपितु मिथिला मिहिर साप्ताहिक, दैनिक मिथिला मिहिर, समय-साल द्वैमासिक एवं त्रैमासिक पूर्वोत्तर मैथिलमे सम्पादक रूपमे काज करबाक क्रममे अनुभव कयने छी । मैथिली पत्रकारिताक विषयमे कहल जाइछ जे पत्रकारिताक संभावना बनि रहल अछि किएक तँ मैथिलीमे नियमित रूपेँ ने दैनिक पत्र अछि आ ने सामाजिक तथ्य-कथ्यक आधारपर सूचना, घटनादिक परसयवला पत्रिके अछि । मुदा जखन पत्रकारितापर कोनो परिचर्चा होइत अछि तँ कतेक विद्वान एकर उपलब्धि अपना नामे अथवा अपन गोलक आन व्यक्तिक नामे बाजि-लीखि तृप्तिक अनुभव करैत छथि । वस्तुतः मैथिलीक जतबा पत्र-पत्रिका आइ धरि प्रकाशित भेल अछि तकर जँ सम्यक अध्ययन-विश्लेषण कयल जाय तँ मैथिली पत्रकारिताकेँ कतहुसँ न्यून नहि मानल जा सकैछ । एकर मूल कारण ई जे जकरामे जतेक सामर्थ छलैक से कऽ कऽ देखौने छैक । आ जँ से

नहि होइतैक तँ बड़का-बड़का पागधारी किएक मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे आबयवला युवाकेँ पत्रकारितासँ विमुख कऽ ओकरा साहित्यकार बनयबामे लागि जाइत छथि । वर्तमानमे एकर दू टा उदाहरण सोझांमे अछि. - अजित आजाद आ बालमुकुन्द पाठक । पत्रकारिता गुण-दृष्टिसँ ई दुनू गोटे सम्पन्न छथि मुदा हिनक तेवर देखि साहित्यिक मैदानमे शनैः शनैः स्थानान्तरित कऽ देल गेल । पूर्वमे सेहो अनेक पत्रकारकेँ साहित्यकार बना पंगु बना देल गेल । साहित्योकेँ युवा-स्वर चाही से हम मानैत छी मुदा ईहो ध्रूवसत्य अछि जे जाहि भाषाक पत्रकारिता प्रखर नहि तकर समाज पछुआयल-अविकसित अछि । मराठी, बंगला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, असमियाक पत्रकारिता प्रखर अछि तेँ ओकर समाजक स्वरकेँ दबाओल नहि जाइछ । दोसर दिस मैथिली, मगही, भोजपुरी, उड़ीया आदिक पत्रकारिता कमजोर अछि तेँ एहि समाजक स्वर सरकार अथवा सत्ता लग नहि पहुँचि पबैत अछि आ ओ अविकसित समाजक रूपमे परिगणित अछि ।

पत्रकारिताक उद्‌भवे मिशनक रूपमे भेल अछि आ मैथिली पत्रकारिताकेँ तँ आइयो मिशनरी जुनून सँ विकसित कयल जा सकैछ मुदा मैथिलीक दुर्भाग्य अछि जे मैथिलीमे मिशनक रूपमे काज करबाक परिपाटिये नहि अछि । आत्मतुष्टि, आत्मगौरव आ आत्माभिमानसँ ग्रसित अछि सम्पूर्ण मैथिली लेखन समाज । मुदा हम एकरा हीन भावनाक रूपमे लैत छी । जकरामे सत्य लिखबाक, सत्य बजबाक आ सत्यमार्गपर अड़ल रहबाक क्षमता नहि से पत्रकार तँ नहिये लेखक-साहित्यकारो नहि भऽ सकैत अछि । **दुर्भाग्य मैथिलीक छैक जे पत्रकारिता जगतमे 50 प्रतिशतसँ बेसी मैथिल कार्यरत छथि मुदा ओ मैथिली भाषामे किछु नहि लिखताह, मानहानि अथवा स्तरहीनताक बोध हुनका होइत छनि । खासकऽ ओ मैथिली लेखनकेँ हीन बुझैत छथि तेँ आइ स्थिति ई छनि जे ओ दोसरक खेत तामैत-कोड़ैत छथि आ दोसर हुनकर खेत चरि कऽ चलि जाइत छनि ।** मैथिलीमे दसो टा पत्रकार तैयार होथि तँ मैथिलीये नहि मिथिलोक उद्धार भऽ सकैत अछि ।

मैथिली पत्रकारिताक दयनीय स्थितिक लेल 'वर्कशॉप लेखन'क नहि होयब सेहो एकटा मूल कारण अछि। मैथिलीमे पहिने कोनो कोनो ठाम लेखकक समूह जुटैत छलाह आ लेखन होइत छल। हमरा स्मरण अछि बनारसक एकटा 'वर्कशॉप'। हम कालेजक विद्यार्थी रही। पिताक संग गेल रही। ओहि मे सभ भाषाक लेखक जुटल रहथि। मैथिलीमे हमर पिता पं. सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा. गंगेश गुंजन आ उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' रहथि। दिनमे ई लोकनि कोनो कोनो विषय पर लेखन करथि आ सांझमे दोसर प्रकारक कार्यक्रम होअय। आइ ओ चारू लेखकक स्थान कतेक उच्च छनि से हम देखि रहल छी। एहि प्रकारक लेखनसँ लेखनक एकटा एहन धार बनैत अछि जे स्वतः कोनो विषयपर बहबा लेल चलि पड़ैत अछि। मुदा आइ की भऽ रहल अछि – जमकल, ठमकल आ महकल कूपक बेंगकेँ बेसी प्राथमिकता देल जा रहल अछि जकरा अविरल धार बहयबाक क्षमता तँ नहिये छैक जे जतऽ जाइत अछि ओहिठामक वातावरणकेँ दूषित कऽ दैत अछि। खासकऽ मैथिली पढ़िकऽ जे मैथिली पत्रकारितामे औताह वा आयल छथि से कोन रूपक काज करैत छथि से ककरोसँ नुकायल नहि अछि। ओहिना स्मरण अछि – दैनिक मिहिरमे रही। स्पोर्ट्स, सिनेमा, कृषि सहित साहित्येतर विषय हम देखैत रही। छुट्टीमे गेल छलहुँ तँ आजुक एकटा प्रख्यात साहित्यकार कार्यभार लेलनि। दरभंगामे अखबार लेलहुँ तँ 'बेंकटराघवन' क्रिकेट खेलाड़ीक फोटोक कैप्सनमे बेंगसरकर पढ़ि माथ पीटि लेने छलहुँ। ई स्थिति कोनो तहिये छल से बात नहि, आइयो अछिये। संघ लोकसेवा आयोगक कोनो परीक्षार्थी श्रीमान्सँ सफलता लेल परामर्श मंगैत छनि तँ ओ पाहुन विलमि जाउ, गुजरियाक गाम आदि-आदि स्तरहीन रचना पढ़ि ज्ञानवर्द्धनक प्रेरणा दैत छथिन आ ओ लोकनि हमरा लग आबि अपन आक्रोश देखबैत छथि।

मैथिली पत्रकारिता धनक कमीक कारणे गति नहि पकड़ि पाबि रहल अछि सेहो बात नहि अछि। मिथिलामे आब हजारो एहन कारोबारी छथि जिनका लग करोड़ोक सम्पत्ति छनि जे पत्र-पत्रिका हेतु ठाढ़ भऽ

सकैत छथि । मुदा जेना मिथिलामे आयल बरखा-बाढ़िक पानि बरबाद भऽ जाइत अछि तहिना एहिठामक लोकक संचित अन्न-धन सेहो जियान भऽ जाइत छैक आ ओ स्वभाववश 'कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ'क विलाप टा करैत अछि । मुदा एकर ठीक विपरीत महाराष्ट्रमे खासकऽ मुंबईमे जतेक अधिक वर्षा प्रतिवर्ष होइत अछि तँ ओहिठामक वासी ने अघाइत अछि, ने अकुलाइत अछि अपितु प्रकृति प्रदत्त एहि संसाधनकेँ अपन क्रिया-प्रक्रिया द्वारा धनक रूपमे संचित कऽ वर्ष भरि पेयजलक रूपमे उपयोग करैत अछि । एकरा पौरुष कहल जाइत छैक मुदा स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात एहिठामक राजनीतिक प्रक्रिया पर-पौरुषपर आश्रित अछि तखन कोना होयत एहिठामक स्वभाषाक पत्रकारिताक संचालन । महाराष्ट्रमे भारी जन-धनक हानिक अछैत वर्षा-बाढ़िकेँ वरदान मानल जाइत अछि तँ मिथिलामे वर्षा-बाढ़िकेँ अभिशाप बूझल जाइछ यैह अन्तर अछि विकसित होयबाक आ नहि होयबाक ।

मैथिली पत्रकारिताकेँ सशक्त रूपें ठाढ़ कयल जयबा लेल जँ निर्भीक, स्वाभिमानी, जागरूक, ज्ञानी, दृष्टि-सम्पन्न पत्रकार चाही तँ ओकरा चलयबा लेल महाराजा कामेश्वर सिंह सन दूरदर्शी प्रबंधक चाही जे अपन लोकक ज्ञान विस्तार ओ आवश्यकताक पूर्ति करयबला त्रिभाषा फार्मूलाक अनुरूप अंग्रेजी, हिन्दी एवं मैथिलीक क्रमशः इन्डियन नेशन, आर्यावर्त एवं मिथिला मिहिर सन अद्वितीय पत्र चलाकऽ देखा देलक जे पत्रकारिता की थिक, पत्रकारिताक महत्व किएक छैक आ पत्रकारितासँ कोना लक्ष्य-भेदन कयल जा सकैछ ।

मुदा जाहिठाम पत्रकारिताक इतिहास लीखिकऽ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल जा सकैछ आ पुरस्कार प्राप्तिक बीस वर्ष बाद ई कहल जाय जे पत्रकारिताक संभावना बनि रहल अछि ततऽ जँ पत्रकारिताक ई मरणासन्न स्थिति अछि तँ आश्चर्य नहि होयबाक चाही । जाहि भाषा-समूहकेँ बिना आंदोलनक संवैधानिक अधिकार भेटि जाइ, जाहि भाषाक दोयमे नहि तेसर चारिम पौदानक लेखक-साहित्यकारकेँ राष्ट्रीय, प्रादेशिक ओ सामाजिक पुरस्कार-सम्मान भेटैक, जाहि भाषाक अधिकांश

प्राध्यापक, जकरा मात्र डिग्री टा छैक, ज्ञानक लेसो नहि, केँ पैघसँ पैघ पाठ्यक्रम बनयबासँ लऽ कऽ परीक्षक धरि बना देल जाइछ, जाहि भाषाक आकदेमीक शीर्ष पदाधिकारीकेँ भाषा-साहित्यक ज्ञान नहि ताहि भाषाक पत्रकारिता जँ मरणासन स्थितिमे अछि तँ आश्चर्य नहि होयबाक चाही। आश्चर्य तँ एहि बात पर होयबाक चाही जे वर्तमानमे जतेक पत्र-पत्रिका चलि रहल अछि, जाहिमे एक सँ एक मूर्धन्य विद्वान संचालन सीटपर बैसल छथि से पत्रकारिताक कोन रूपकेँ प्रस्तुत कऽ रहल छथि। आन तथ्य तँ छोड़ि देल जाय कोनो पत्रक अपन भाषा छैक तँ तकरो परिपालन की ओहि पत्रमे भऽ रहल अछि की नहि से देखल जयबाक चाही।

वर्तमानमे मैथिलीक पत्रकारिताक स्वरूप की अछि, पत्रकारिताक अनुरूप मैथिली पत्र-पत्रिका काज कऽ रहल अछि की नहि, से सत्य ताकल जयबाक चाही। हमरा जनैत पत्रकारिताक काज होइछ समाजकेँ साकांक्ष राखब आ नीक बाटपर लऽ जयबामे मार्गदर्शन करब। त्याज्य अथवा खराब काजक निन्दा करब आ नीक काज करबा लेल प्रोत्साहित करब। समाजमे पसरि रहल ईर्ष्या-द्वेष, साम्प्रदायिकता, भेदभाव, जातीयता आदिक चातुर्यपूर्ण ढ़ंगसँ विरोध करैत समाजमे सौहार्द बनौने राखब। शिक्षा, स्वास्थ्य आ समाजोपयोगी सभ सुविधा बहाल रहय ताहि हेतु माहौल बनायब तथा जनोपयोगी विषयक संचालन-देखरेख ठीक ढ़ंगसँ भऽ रहल अछि कि नहि, ताहिपर नजरि रखैत ओहि विषयक प्रति जनमानसकेँ आकृष्ट करब।

हम मानैत छी जे जतेक पत्र आइ धरि निकलल आ निकलि रहल अछि से मूल पत्रकारिताक कसौटीपर पूरा-पूरी ठठि नहि सकल अछि मुदा की आब इन्टरनेट आ फेसबुकक जमानामे सेहो वैह घीसल-पीटल कार्यप्रणालीक चलन। जँ मैथिलकेँ, मिथिलाकेँ आ मैथिलीकेँ अपन अस्मिताक रक्षा करैत अपन भूभागकेँ सुसम्पन्न बनयबाक अभिलाषा छैक तँ ओकरा अपन पत्रकारिताक धारकेँ, स्वरकेँ तेज करहि पड़तैक।

27/8/2018



मूर्खक लाठी माझ कपार

मैथिलीमे बेस कविता, कथा ओ आन-आन विधाक रचना लिखा रहल अछि । ई प्रसन्नताक बात अछि । जेँकि हम सम्पादनक काजसँ जुड़ल छी तेँ इच्छा होइत रहैत अछि जे मैथिली लेखनक क्षेत्रमे बेसी सँ बेसी लोकक आगमन होअय आ मैथिली भाषा, मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि होअय ।

लेखनक क्षेत्रमे अयबा लेल सभसँ पहिल शर्त अछि भाषाक ज्ञान आ शब्द सामर्थ्य । शुद्ध आ प्रांजल भाषा तँ लेखनक लेल आवश्यक अछिये । मुदा हमर मैथिलीक दुर्भाग्य अछि जे जकरा शब्दक ज्ञान नहि छैक सेहो सभ महान साहित्यकारक कोटिमे आबि कऽ बैसि जाइत छथि आ हुनक चारण भऽ कऽ ज्ञानी लोक ओतऽ उपस्थित रहैत छथि ।

भाइ साहेबसँ एकबेर किछु मतान्तर भऽ गेल छल तँ लिखने रही, जकरा फेर एतऽ दोहरबैत छी - 'शब्दक अभिव्यक्तिमे सामान्य लोक बरमहल ओझराइए, लेबझाइए मुदा साहित्यकार वर्ग शब्दक जाल बीनि कऽ, ओकरा टाल गुल्ली जकाँ खेलाकऽ सामान्य लोकक बीच सम्मानित-प्रतिष्ठित होइए, शब्दकेँ सैंतैए, सजबैए आ ओहीसँ समाजकेँ दिशा-निर्देश सेहो दैए ।' ई बात एतऽ एहि लेल कहि रहल छी जे सामान्य लोक साहित्यकारकेँ बहुत सम्मानक दृष्टिसँ देखैत अछि । आ तेँ जखन ओ नामक अनुरूप ओकर हस्तलिखित शब्दकेँ नहि देखैत अछि तँ ओकरा घोर निराशा होइत छैक । कमोबेस वैह स्थिति हमरो अछि । हमरा लग एकसँ एक साहित्यकारक पाण्डुलिपि सुरक्षित अछि । किछुक शब्द- विन्यास आर शब्द-प्रयोग देखैत छी तँ श्रद्धापूर्वक माथ झुकि जाइत अछि आ किछुक पाण्डुलिपि देखिते माथ धऽ लैत छी । तीन चारि पोथीक प्रणेता जखन 'आइग, पाइन, पइघ' लिखथि, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार 'आइकेँ 'आय' 'अछि' केँ 'ऐछ'

लीखि जीवन खेपि लेलनि तँ नवसिखुआ जँ गलत लिखैत अछि तँ ओकरा कोना सम्हारल जाय । सम्हारैत-सम्हारैत तँ ओ लोकनि माथपर चढ़ि आब हमरे सिखबैत छथि ।

हमरा जनैत एकर मूल कारण अछि अत्यधिक छूट देब वा दोसर तरहेँ कही तँ आरक्षण देब । ई कहब जे जे महिला छथि, हिनक गलती माफ करैत आगू बढ़बियनु तँ ई कतेक धरि उचित अछि । की 'सौंसे गाछ पोनठेल्ले' होअय । प्रारंभिक पांच-सात वर्ष क्षम्य अछि । लेखनमे एते समय अपनाकेँ खराजबामे लगिते छैक । मुदा ई की-हम जिनगी भरि ओहिना लिखब, हमर मानक संग सम्मानो करैत रहू ।' ई स्थिति भयावह अछि । एहिसँ एहन लेखक भने प्रत्यक्षमे पूजाबैत छथि, परोक्ष मे क्यो मोजर नहि दैत छनि । सभसँ आश्चर्यक बात तँ तखन होइत अछि जखन एहि कोटिक लेखक ओहि सम्पादको लोकनिकेँ मोजर नहि दैत छथिन जे कंकड़-पाथर बीछि कऽ, शब्द परिवर्तन कऽ हुनकर रचनाकेँ पठनीय, बोधगम्य ओ आकर्षक बनबैत छथिन । ई चलन महिले लेखनमे अछि से बात नहि पुरुष लेखनमे तँ बूझू जे ई प्रतिशत आब सत्तरिसँ बेसी भऽ गेल अछि । पत्रिका निकालबाक क्रममे बादमे हम अपन कम्पोजीटरकेँ किछु लेखकक किछु शब्दाबलिये दऽ देने छलिऐक - एकटा शुद्ध आ एकटा अशुद्धक जे ओ देखि कऽ स्वयं शुद्ध कऽ लिअए । एहिसँ लाभ भेल जे हमर कम्पोजीटर बहुत रास शुद्ध शब्द कम्पोज करब जानि गेल मुदा हमर लेखक लोकनि अड़ले रहलाह - 'मूर्ख'केँ 'मुर्ख' लिखैत रहलाह आ दनादन पोथीपर पोथी अबैत रहलनि ।

हमरा ई बुझबामे नहि अबैत अछि जे एकटा लेखक जखन भाव बदलि सकैत अछि, भंगिमा बदलि सकैत अछि, गुट बना सकैत अछि, गुट बदलि सकैत अछि, पाइ खर्च कऽ, पैरवी कऽ पुरस्कार-सम्मान पाबि सकैत अछि तँ ओ कनेक मेहनति कऽ अपन शब्दकेँ सम्मान नहि दऽ सकैत अछि ? भरि जिनगी आंकड़-पाथर ढोइत रहब आ एक दू टा सम्मान पाबि ढेकरब की उचित लगैत अछि ! मोन पड़ैत छथि राजमोहन जी, जीवकान्तजी; आइयो भीम बाबू, प्रदीप बिहारी, केदार कानन, विभूतिक आनन्दक पाण्डुलिपि देखि मोन नाचि उठैत अछि । ने सम्पादनक

आश्यकता, ने शाब्दिक अशुद्धि । आंगुर पर गनल जा सकैछ एहन शब्द-सामर्थ्यक धनीकके ँ ।

दुर्भाग्य ई जे जकर लेखन जतेक असहज तकर गौरव-बोध ओतबे उच्च । एहन सन-अहाँके ँ बुझबाक हो तँ मथू-गीजू हमर लेखनके ँ । मन खौंझा जाय तँ अपने दिससँ हमरा नामे लीखि कऽ पिण्ड छोड़ाउ हमरासँ ।' भाइ सुभाष चन्द्र यादवजीक पोथी 'गुलो' आयल तँ मोन बेस खौंझायल छल मुदा पोथी पढ़लाक बाद हुनक अभिप्रेत बुझबामे आयल । कारण ओ शुद्ध आ परिमार्जित लिखैत छथि मुदा किछु कहबा लेल ओ ओना भऽ कऽ लिखलनि । आ तेँ बादमे पूर्वोत्तर मैथिलक सम्पादनक क्रममे ओहि 'मैथिली' पर एकटा नीक विमर्श चलौने रही ।

सभसँ आश्चर्यक विषय तँ ई अछि जे जकरे लीखय नहि अबैत छैक सैह बेसी हल्ला करैत अछि मुदा एहि कोटिक लेखकके ँ अपन टेटर अपने नहि देखाइत छनि । तेँ कहियो काल मोन होइत अछि जे एहि कोटिक लेखकक जे पाण्डुलिपि हमरा लग सुरक्षित अछि तकरे मुख्य विषय बना, ओकरा 'स्कैन' कऽ एकटा पत्रिका छापी । मुदा फेर होइत अछि - 'हेहराके ँ की कोनो लाज' तेँ चुपचाप बैसि जाइत छी ।

असल बात ई जे वर्तमानमे बेसी लोक साक्षर टा छथि, किछु गोटे शिक्षितो छथि मुदा शिक्षित भेला उत्तर दीक्षित होयब अपमान बुझैत छथि । तेँ अपन लिखलाहाके ँ प्रकाशनमे जायसँ पूर्व ओकर स्क्रिनिंग करयबा लेल वरीय लेखक लग जायब श्रेयष्कर नहि बुझैत छथि । कारण हुनका मनमे पैघत्वक छवि बैसल रहैत छनि । तेँ मैथिलीक बेसी लेखन 'मूर्खक लाठी माझ कपार' पड़ैत अछि । आ ई बात सम्पादके बेसी बुझि सकैत छथि जिनका एहि कोटिक लेखक सभसँ बरमहल पाला पड़ैत छनि ।

हम एखन 'विश्राम' मे छी, भाइ रामलोचनजी एहि कोटिक लेखकक लीलासँ जुझैत होयताह आ मनेमन अपन सम्पादन धर्म के ँ रोज एकबेर कहैत होयताह - 'तोके कि कहब कान्हु, हमे अगेआन ।'

12/12/18



श्रेय आ प्रेय

शेखर सम्मान 2008क बाद हम बन्द कऽ देने रहिऐक । मुदा एहि लऽ कऽ हमरा बहुत कचोट भेल जे हमरा बहुत दूर धरि खेहारलक । एतेक धरि जे हमरा लागल जे पिताक नामपर कयल जायवला काज छोड़ि हम जघन्य अपराध कऽ लेलहुँ अछि । ई स्थिति किछु मास धरि हमर दिमागकेँ मथैत रहल ।

एहिसँ किछु वर्ष पूर्वे हम संघ लोकसेवा आयोगक मैथिली पोथी एवं ओकर मैटेरियल उपलब्ध करयबाक काज शेखर प्रकाशनक माध्यमसँ प्रारंभ कऽ देने रही । संयोग जे एही समयमे विभिन्न संस्था आ किछु नेता लोकनि बिहार सरकारसँ बिहार लोकसेवा आयोगमे मैथिलीकेँ पुनः शामिल करबाक मांग करय लागल रहथि । अन्ततः भाजपाक सहयोगी पाटी होयबाक कारणे तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 2008 मे घोषणा कयलनि जे आब बिहार लोकसेवा आयोगमे मैथिलीकेँ शामिल कऽ लेल जायत । हम 'समय-साल' मे एतद्संबंधी सूचना दऽ विद्यार्थी लोकनिकेँ तैयार रहबा लेल कहलियनि । मुदा ई परीक्षा कहियासँ प्रारंभ होयत से सरकारी कोनो सूचना नहि आयल छल । ई प्रश्न हमरा मोनमे हौड़ऽ लागल ।

हम एकटा प्रयासक रूपमे काज करबा लेल तत्कालीन विशेष पदाधिकारी (बिहार लोकसेवा आयोग) श्री श्यामानन्द चौधरीजी सँ ऑफिसमे जा कऽ भेंट कयलियनि । ओ सभ टा गप्प सुनलनि । ओ स्वयं मातृभाषा मैथिलीक भक्त ओ मैथिली साहित्यक ख्यात जानकार ओ पाठक छथि । हुनकासँ भेंटक क्रम मासमे तीन चारि बेर भेल जाहिमे तत्कालीन परीक्षा नियंत्रक श्री शरदचन्द्र झाजी एवं आयोगक सचिवकेँ कोना बुझा-सुझा कऽ 2008क परीक्षामे मैथिली शामिल होअय ताहिपर गप्प-सप भेल । ओ अति सक्रिय भऽ उठलाह आ लोकसेवा आयोग

मुख्यमंत्रीकेँ ई बुझयबामे सफल भऽ गेल जे 2008क परीक्षामे मैथिलीकेँ शामिल कयल जा सकैछ जे हुनक राजनीतिक सफलतामे सहायक होयत। फेर की छल अकस्मात् एक दिन 10 बजे रातिमे श्री श्यामानन्द चौधरी दूरभाष सँ कहलनि जे मैथिली 2008क परीक्षामे शामिल होयत से निर्णय सरकार आइ (एखन) लऽ लेलक अछि। हम तखनहि हुनका अशेष बधाइ देलियनि।

हुनका बधाइ देलाक तत्क्षण बाद ई सूचना हम आदरणीय डॉ. बासुकीनाथ झा जीकेँ देलियनि जे तहिया चेतना समितिक सचिव रहथि आ आग्रह कयलियनि जे तुरंत सूचना देनिहार एवं एहि काजमे सक्रियतासँ लागल श्री श्यामानन्द चौधरीकेँ बधाइ देथुन। प्रात भेने बासुकी बाबू कहलनि जे ओ तँ अहींकेँ बधाइ देबा लेल कहलनि, किएक तँ अहीं एहि मादे दौड़ि-दौड़ि कऽ ई कार्य सम्पन्न करयबा लेल तगादा करैत छलियनि।

बादमे चेतना समिति विधिवत् एकर श्रेय लैत प्रसन्नता व्यक्त कयलक आ मुख्यमंत्रीजीकेँ बधाइ-पत्र देल गेलनि। मुदा ई काज कोना जोर पकड़लक, के सभ सक्रिय छल, कोना सम्पन्न भेल तकर कोनो चर्च कतहु नहि। जे-से, उपलब्धिक श्रेय क्यो लिअय, काज भऽ गेल हम ताहीसँ प्रसन्न रही।

एही क्रममे एक दिन बैसल रही तँ श्यामाबाबूक पुनः फोन आयल, कहलनि-यौ मैथिलीक परीक्षाक घोषणा तँ भऽ गेलै मुदा ओकर पाठ्यक्रम कार्यालयमे नहि भेटि रहल छै, आब की हेतै ?' हम हुनका आश्वस्त कयलियनि जे हम 1992 मे जे मैथिलीक पाठ्यक्रम लागू भेल रहैक मुदा श्री लालू प्रसाद सरकार द्वारा मैथिलीक परीक्षा रोकि देल गेल रहैक, से लऽ कऽ अबैत छी।' ई वैह पाठ्यक्रम छलैक जकरा संग आन विषयक सेहो नवे बनल रहैक। दोसर दिन भेने ओ पाठ्यक्रम, जे हम 'समय-साल' मे प्रकाशित कयने रही विद्यार्थी लोकनिकेँ सूचना देबऽ लेल, से लऽ कऽ चौधरीजीकेँ दऽ अयलियनि। एहि मादे ओ अनेक प्रकारक जिज्ञासा कयलनि आ जखन ओ संतुष्ट भऽ गेलाह तँ स्वीकार

कयलनि । एही पाठ्यक्रमकेँ तेसर दिन दैनिक हिन्दुस्तानमे मैथिलीक पाठ्यक्रमक रूपमे प्रकाशित कयल गेलैक । हमरा ई पाठ्यक्रम लोकसेवा आयोगक गेटपर दोकान चलबऽवला स्व. चौधरीजी देने रहथि, जे 'झाजी' नामसँ तहिया बड़ ख्यात छलाह । ठीक एकर एक मास बाद श्यामाबाबू आफिसेसँ फोन कयलनि जे हम जे पाठ्यक्रम देने रहियनि से 'हूबहू' वैह रहैक जे हुनक आफिसमे रहनि । ओ कहलनि जे फाइल भेटि गेलै, ओहिमे वैह पाठ्यक्रम छलैक जे अहाँ देने रही । हम निचैनक सांस लेलहुँ जे इज्जति बाँचि गेल ।

बादमे एहि उपलब्धिपर कैकठाम बैसकी-आयोजन भेल । श्यामाबाबूक कैकठाम सही घटनाक उल्लेखक बाबजूद कैक टा संस्था ओ व्यक्ति एकर श्रेय लेलक । श्यामाबाबू हाल (20 दिसम्बर 2018)मे कहलनि जे कोनो संस्था सरकारकेँ एहि संबंधी लिखित प्रस्ताव नहि देने छलैक आ जँ से होइतैक तँ ओकर कॉपी हमरा लग अवश्य अबैत । आ हम कतहु कोनो कागज देखबो नहि कयलिऐक अछि ।

आइ जखन ई घटना सभ मोन पड़ैत अछि तँ श्यामा बाबूक चेहरा झक दऽ सोझां अबैत अछि । आइ ओ बिहार लोकसेवा आयोगक लिखित परीक्षामे पास भेल अभ्यर्थी लोकनिकेँ साक्षात्कार कोना दी से काज करैत पुनः सक्रिय छथि जे बेसीसँ बेसी मैथिलीक अभ्यर्थी सफल होअय । ओ श्रेय लेबाक दौड़मे कतहु नहि छथि मुदा हमर ओ अति प्रेय (प्रार्थना करबा योग्य) व्यक्ति छथि जनिक प्रयासे मैथिली समयसँ पहिने बिहार लोकसेवा आयोगमे शामिल भऽ गेल । श्रेय आ प्रेयक खेल एहिना चलैत रहत मुदा हुनक योगदान हमरा सभ दिन स्मरण रहत ।

25/12/2018



मैथिल संस्था : 'छी-छा'-सँ 'दुर-दुर छिया-छिया' धरि

हम पटना स्थित जतेक संस्था सभ अछि ताहिमेसँ अधिकांशसँ जुड़ल रहलहुँ अछि, जाहिमे सर्वप्रथम चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा मैथिली लेखक संघ आदि प्रमुख अछि, मुदा लेखक संघ छोड़ि आन ककरो सदस्य नहि बनलहुँ । एकर कारण अनेक अछि मुदा मूलमे अपन स्वभाव प्रमुख अछि । संस्थासँ जुड़बाक अनेक कारण होइछ जाहिमे देखार रूपें समाज सेवा होइछ मुदा सत्य पूछल जाय तँ एकर तहमे होइछ अपन-अपन व्यक्तित्वक विकास एवं यश-प्रतिष्ठा प्राप्त करबाक अभिलाषा । आ हमरा जनैत यैह मूल कारण अछि जे संस्था द्वारा कयल काज भूमिक सतहपर स्थापित नहि भऽ पबैत अछि । व्यक्तित्व 'हावी' भऽ जाइत अछि आ संस्थाक उद्देश्य तर पड़ि जाइत अछि ।

हमरा जनैत भारतमे लगभग 150 टासँ बेसी संस्था अछि जे मिथिला-मैथिलीक उद्घोष करैत काज करैत अछि आ दावा करैत अछि जे वैह टा मैथिल संस्कृतिक संवाहक ओ रक्षक अछि । ई दावा सही अछि-कारण शंख तँ फूकल जाइते अछि भने ओ एहि लाथे जे कहैत अछि से ढपोरशंखी भऽ जाइत हो । ई संस्था सभ प्रत्येक वर्ष मुख्य रूपें एक बेर विद्यापति-पर्वक विराट आयोजन करैत अछि जाहिमे वर्ष भरिक काजक लेखा-जोखा रखैत गीतनाद, कवि सम्मेलन, नाट्य-मंचन, सम्मान-पुरस्कार वितरण, पोथी-स्मारिकाक लोकार्पण कऽ अपन काजक इतिश्री करैत अछि । किछु संस्था वर्ष भरि छोट-छोट कार्यक्रम सेहो आयोजित करैत रहैत अछि । हमरालोकनि, हमरा जनैत, एहि प्रकारक आयोजन 'हम मैथिल छी' एवं एहि प्रकारक काज बिसरलहुँ नहि अछि से देखयबाक हेतु मुख्य रूपें प्रयास करैत छी ।

की संस्थाक स्थापना आ उद्देश्य एतबे धरि सीमित अछि ! की एहिसँ मैथिल समाजक भाषा ओ कला-संस्कृतिक विकास भऽ रहल अछि ! हमर धारणा अछि जे उपर्युक्त गतिविधिसँ मात्र विकासक विषयकेँ जियौने टा राखल जा सकैत अछि, विकसित नहि कयल जा सकैछ । हम एहिठाम एकटा उदाहरण देब । गत दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व मैथिलीमे समय-साल, घर-बाहर, लोकभूमि, गामघर, जखन-तखन, मिथिला-दर्शन, मिथिला-दर्पण, पूर्वोत्तर मैथिल, जानकी, हिलकोर, अंतिका, कर्णामृत, रचना सहित मिथिला आवाज, मिथिला समाद सन पत्रिका ओ अखबार प्रकाशित होइत छल । चारि करोड़ आबादी, डेढ़ सय मैथिल संस्था एकर सभक पांचो सय प्रति खपयबाक जँ सामर्थ्य रखितय तँ एहिमेसँ अधिकांश पत्र-पत्रिका जीवित रहितय । मैथिल संस्था ओ मैथिल समाज ई नहि मानैत अछि जे ओकर स्वर मैथिलीयेसँ मजबूत भऽ सकैत छैक । यैह हाल मैथिली पोथीक सेहो अछि । ओहो तीन सयक संख्यामे छपैत अछि मुदा एकर खपत नहि होइत छैक । मैथिल समाजकेँ मार्गदर्शन करबा लेल मैथिली पत्रकारिताकेँ समृद्ध होयब आवश्यक अछि । आ एहि काजकेँ गति देबामे मैथिल संस्था बेस सहयोग कऽ सकैत अछि । कोनो संस्था जे अपन आयोजनमे हजारसँ बेसी दर्शक जुटा लैत अछि से की एक सय पाठककेँ पत्रिका नहि उपलब्ध करा सकैत अछि । संस्था पाठक आ पत्र-पत्रिकाक दूरीकेँ मिटा सकैत अछि । एहिसँ मैथिलीक पाठकीयता बढ़त आ मैथिली पत्र-पत्रिका स्वतः निखरैत पत्रकारिताक जे उद्देश्य रहैछ तकरा समृद्ध कऽ सकत । की संस्थाक एहि काजसँ मिथिला-मैथिलीक विकास नहि होयत । की एहिसँ मिथिलाक बात एक छोर सँ दोसर छोर धरि नहि पहुँचत ।

प्राप्त सूचनानुसार बिहारक विद्यालय, महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालयक मैथिलीक विभाग मिलाकऽ लगभग सात सय शिक्षक कार्यरत छथि । मुदा हमरालोकनिक दुर्भाग्य अछि जे सभठामक विद्यार्थीक संख्या जँ मिला देल जाय तँ हजारमे नहि अछि । हँ, इन्टरमे मातृभाषाक रूपमे दस-बारह हजार विद्यार्थी मैथिलीक परीक्षा दैत अछि । चौंकाबयवला

बात ई अछि जे नियोजित शिक्षकक बहालीक परीक्षा होइत अछि तँ डेढ़ दू लाख परीक्षार्थीमे सँ 30 हजारसँ बेसी अभ्यर्थी मैथिली विषय राखि कऽ परीक्षामे बैसैत छथि जखन कि एहि हेतु एखनधरि ओकर पाठ्यक्रमक अनुसार कोनो सम्यक पोथी धरि नहि प्रकाशित भेल अछि । की मैथिलीक संस्था सभ जे अपन आयोजनमे लाखो टाका फुकैत अछि से अपन भाषा-भाषीकेँ नियोजन-प्रक्रियामे मदति करबा लेल एहि प्रकारक पोथी नहि प्रकाशित कऽ सकैत अछि ! की ओकर काज मात्र एतवे छै जे सफल अभ्यर्थीकेँ पाग पहिरा अपना-अपना गोलमे रखबाक ब्योंत टा करय !

कैक टा विद्यालयमे, महाविद्यालयमे मैथिलीक विद्यार्थीक संख्या नगण्य अछि आ ओहिठाम बहाल शिक्षक संस्थाक दोसर काज सभ करैत छथि । विद्यार्थीक संख्या कोना बढ़य ताहि लेल ने प्राध्यापक-शिक्षक चिन्तित छथि ने मैथिल संस्थाक अगुआ लोकनि । शिक्षक-प्राध्यापक साहित्यकार बनबा लेल अपस्यांत छथि, नेता बनबा लेल आफन तोड़ने छथि मुदा एकटा शिक्षक रूपमे मैथिलीक किलाकेँ कोना मजबूत बनाबी ताहि लेल कोनो चिन्ता नहि । नोकरी टा बांचल रहय आ आपसमे सौतिन जकाँ झोंटाझोटी करैत ओझरायल रही आ नोकरी खेपि ली ।

साहित्यकार तँ सहजे क्यो एकटा कविता सुनि लिअय तहीमे मस्त । आ आब तँ अगवे सम्मान-पुरस्कार लुझबा लेल गोल-गोलैसी पहिने रचनाकर्मक उत्कृष्टताक सोच बादमे कयल जाइत अछि । तेँ ने आयोजक आयोजन छोड़ि पुरस्कार लेल दौड़ि जाइत अछि । संस्था सेहो एहि खेलमे शामिल भऽ गेल अछि आ 'अहाँ हमरा अपन संस्थामे सम्मान करू हम अपन संस्थामे अहाँकेँ सम्मानित करब'क क्रम प्रारंभ भऽ गेल अछि । मिथिलाक नव पीढ़ी अपन मातृभाषा, संस्कृति-कला एवं परम्परासँ कोना अधिकाधिक जुड़य तकर चिन्ता नहि । मैथिल संस्था चाहय तँ स्थितिमे परिवर्तन अनबा लेल शिक्षक-प्राध्यापक वर्गकेँ जगा सकैत अछि, मैथिलीक विद्यार्थीकेँ जुटा सकैत अछि ।

मैथिली जखन संविधानमे आयल तँ हम अपन उर्जाकेँ सीमित

क्षेत्रमे खपायब से निर्णय कयलहुँ । मैथिलीक विद्यार्थीकेँ पाठ्यक्रमक अनुसार पोथी जुटा कऽ देब से निर्णय लेलहुँ । एहिमे अपन प्रकाशनक माध्यमसँ किछु जे अभाव छल तकरा पूर्ति करबाक चेष्टा कयलहुँ आ आइ शेखर प्रकाशन प्रतियोगी परीक्षार्थी एवं मैथिलीक उच्च शिक्षा लेल कतेक उपयोगी अछि से सर्वविदित अछि । जखन कि हम एक व्यक्ति, जकरा दू चारि गोटेक मात्र सहयोग प्राप्त छैक से काज कऽ देखा सकैत छी तँ मैथिल संस्था सभ जकरा दस जोड़ासँ पचास जोड़ा हाथक शक्ति ओ उर्जा छैक से आन-आन महत्वपूर्ण काज नहि कऽ सकैत अछि ? मैथिलीक पठन-पाठन तथा अध्यापनक स्थितिमे सुधार अनबा लेल मैथिल संस्था कारगर नहि भऽ सकैछ ? की एहि प्रकारक कार्यसँ मातृभाषा मैथिली एवं मिथिलाक मैथिल लेल रोजगारक मार्गमे सहायक नहि भेल जा सकैछ ?

मैथिलीक संस्कार-गीत, लोकगीत, विद्यापति-गीत सहित समस्त मैथिल लोकाचारक गीत-संगीतक झलक आब कोनो कार्यक्रमटामे देखबामे अबैत अछि । शनैःशनैः शहरुआ प्रवृत्तिक कारणे ई सभ बिलायल जा रहल अछि । आब गामघर ओ शहरी मैथिलमे गीत गौनिहारक संख्या अत्यल्प अछि । हमरालोकनि विद्यापतिपर्वमे गीत-संगीतकेँ प्रमुखतासँ प्रस्तुत तँ करैत छी मुदा कोनो स्तरसँ ई प्रयास नहि भऽ रहल अछि जे मैथिली गीतक रसधार बहयबा लेल कोनो निस्सन व्यवस्था करी । मैथिल संस्था जँ चाहय तँ एहि क्षेत्रमे अतुलनीय काज कऽ सकैत अछि। संस्थाक प्रांगणमे पारंपरिक संगीत, विद्यापति-संगीत, संस्कार गीतक प्रशिक्षणक संगहि एहि गीत सभपर नृत्य-नाटिका, बैले इत्यादिक तैयारी कऽ मैथिल गीत-संगीतकेँ एक नव धरातल प्रदान कयल जा सकैछ । आइ बंगलाक रवीन्द्र-संगीत अपन एकटा धाराक रूपमे विकसित भऽ गेल अछि मुदा छओ सय वर्षसँ निरंतर लोककंठमे प्रवाहित भऽ रहल विद्यापति-गीत एकटा धाराक रूपमे विकसित नहि कयल जा सकल अछि । की अपन कला, अपन संस्कृति आ अपन गीत-संगीतकेँ विकसित कऽ एकटा विशुद्ध मैथिल धारा बनयबा लेल मैथिल संस्था

सचेष्ट नहि भऽ सकैछ ? आइ आवश्यकता अछि मैथिल सम्यताकेँ अधिकसँ अधिक उजागर करबाक मुदा से वर्षमे एकबेर 'झकाझक' कार्यक्रम कयलासँ नहि भऽ सकैछ । एहि लेल निरंतर रूपें प्रयास करय पड़त, छुतका छोड़ाओल जायवला कार्यक्रमसँ एतवे टा होयत जे आन-भाषा-भाषी बूझत जे ई 'छी-छा' वलाक कार्यक्रम चलि रहल अछि ।

चेतना समिति, पटना एक बेर स्वास्थ्य-चिकित्साक मेला रूपमे आयोजन कयने छल । ओहिमे हजारो मैथिल उपस्थित भऽ अपन रोगक निदानक अवसर प्राप्त कऽ आह्लादित भेल छलाह । ई ततेक ने सफल भेल छल जे समितिक सभ सदस्यक मोन जुड़ा गेल रहैक । लोक तँ जुड़बे कयल मैथिल आचार-विचारक सर्वत्र प्रशंसा भेल । तेँ मैथिल संस्था जँ अपन लोककेँ मिथिलाक विकास लेल, मैथिलीक लेल, मैथिल संस्कृतिक विभिन्न आयामकेँ विकसित करबा लेल अपन लोककेँ जोड़ि लेबऽ चाहत तँ विभिन्न प्रकारक सफल आयोजनसँ अवश्य जोड़ि लेत ।

भारतमे हमरा जनैत कोनो एक संस्कृतिकेँ अक्षुण बनौने रखबा लेल ओतेक संस्था नहि होयत जतेक मैथिलक अछि । मैथिल सेहो कोनो एहन क्षेत्र नहि अछि जतय अपन प्रतिभाक झंडा नहि फहरौने हो । मैथिल संस्थाकेँ सचेत भऽ आबो अपन संस्कृतिक विकासक काजमे लागि जयबाक चाहिऐक तखने ओकर सार्थकता छैक । जँ ओ साकांक्ष नहि होयत तँ चारि करोड़क संख्याक अछैत मैथिलक एहिना छिछालेदर होइत रहत । हम सभ कोनो सुविधा पयबा लेल अनका दिस बकोध्यानम लगौने रहब आ रवीन्द्रजी (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) सन गीतकार-गायक मंचपर आबि 'दुर-दुर छिया-छिया' गीत गाबि धिक्कारैत रहताह ।

12/2/2019



हम आभारी छी

आदरणीय मन्त्रेश्वर झाजीकेँ पता नहि किएक हमरापर अत्यधिक विश्वास रहलनि अछि आ तेँ जखन-जखन ओ किछु करय चाहथि तँ हमरासँ अवश्य कहथि । मैथिली लेल ओ जतेक काज कयलनि अछि तकर मूल्यांकनो सच पूछल जाय तँ एखन धरि नहि कयल गेल अछि। ओ आर बहुत रास काज करय चाहैत छलाह मुदा मैथिलक राजनीति देखि ओ थतमता जाथि जेना हमहूँ बगदैत रहलहुँ अछि ।

अवकाश प्राप्त कयलाक बाद ओ एकटा व्यवस्थित रूपें पत्रिका निकालऽ चाहैत छलाह । एहिपर किछु काजो प्रारंभ भेल मुदा संयोग जे ओही समयमे मैथिली लेखक संघक गठनक प्रस्ताव आयल आ हमर एवं विनोद कुमार झाजीक आग्रहपर ओ अध्यक्ष बनबा लेल तैयार भऽ गेलाह । लेखक संघक अध्यक्ष बनलाक बाद पत्रिकाक योजना ठप भऽ गेल । मुदा जेँ किछु करबाक इच्छा रहनि तहिया तेँ जखन हुनका चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री सम्मान देल गेलनि तँ ओ ओही मंचसँ हमरा (शेखर सम्मान समिति) 15 हजारक राशि युवा पुरस्कार प्रारंभ करबाक हेतु देलनि । मुदा हमर दुर्भाग्य जे ओ पुरस्कार हम प्रारंभ नहि कऽ सकलहुँ मुदा बादमे ओही राशिसँ 'भविष्णु' नामक एकटा पोथी जे डॉ. रमण कुमार झा तैयार कयलनि तकरा प्रकाशित कयलहुँ । आइ ओ पोथी कैकटा युवाकेँ रोजगार दिया अपन उपयोगिता सिद्ध कयलक अछि। एहि हेतु हम सर्वप्रथम श्री मन्त्रेश्वर जीक आभारी छियनि तँ युवा एवं कर्मठ लेखक श्री रमण कुमार झाक सेहो आभारी छी ।

जेना हम मैथिली लेल करय चाहैत रहलहुँ अछि, मन्त्रेश्वरजी करैत रहलाह अछि तहिना आनो विशिष्ट व्यक्तिलोकनि मैथिली-मिथिलाकेँ उन्नत्त करबा लेल सक्रिय छथि । क्यो पोथी छपबैत छथि, क्यो पत्रिका

निकालैत छथि । क्यो पुरस्कार चलबैत अछि तँ क्यो-क्यो विभिन्न प्रकारक आयोजनसँ मैथिलीक काज करबामे गौरव-बोधक अनुभव करैत अछि । ई योजना सभ नीक रहैत अछि, करबाक अभीष्टो नीके रहैत छैक मुदा एहि काजमे किछु एहन तत्व शामिल भऽ जाइत अछि जे ओहि योजनाकेँ, कार्यलक्ष्यकेँ बेपटरी कऽ दैत छैक । कैक टा संस्था, जाहिमे साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी, चेतना समिति सन-सन प्रतिष्ठित संस्था शामिल अछि, केँ सेहो एहने तत्व सभ कारीख-चून लगा दैत छैक आ ओ खिधांशक शिकार भऽ जाइत अछि । मुदा किछु एहनो लोक छथि जे लुटल इज्जतकेँ सेहो बचयबाक प्रयास करैत छथि ।

ओना एकटा घटना हमरे लऽ कऽ भेलैक । श्री वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' सेहो हमरे जकाँ जुझारू लोक छथि जे मैथिली लेल बहुत किछु कयलनि आ आगाँ करय चाहैत छथि । मुदा सभकेँ लऽ चलबाक विवशता हुनको कुगरमे धऽ दैत छनि । वैद्यनाथ जी विद्यापति सेवा संस्थानक माध्यमसँ अनेक प्रकारक काज करैत छथि । तीन दिना विद्यापति पर्वसँ लऽ कऽ अनेक प्रकारक काज करैत छथि । एखन धरि दू तीन हजार लोककेँ 'मिथिला रत्न'सँ अलंकृत कऽ खराजि देने छथि । मैथिल समाजमे एखनो हजारो लोक अलंकृत होयबा लेल अपन-अपन गरदनि लऽ घूमि रहल छथि आ हिनका दिस आस भरल दृष्टिसँ तकैत रहैत छथि । खास कऽ विद्यापति पर्वक अवसर ओ जनिका सम्मानित करैत छथिन से अपनाकेँ बेस भागवंत मानैत छथि । संयोगसँ 2010क सम्मान सूचीमे मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे सेवाक लेल हुनक ई नामी संस्था हमरो नामक घोषणा कयलक । सम्मान समितिक निर्णायक मंडलमे सर्वश्री डॉ. भीमनाथ झा, डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ मैथिली अकादमीक पूर्व अध्यक्ष श्री कमलाकान्त झा छलाह । सचिव श्री वैद्यनाथ जी एहि निर्णयकेँ मानैत प्रेस रिलीज जारी कयलनि जे सभ अखबारमे छपलैक । बस की छलैक ! शरदिन्दु चौधरी सन अछूत-अदना सम्मानक अधिकारी कोना होयत ताहिपर विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष पं.

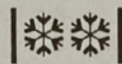
चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पैजामासँ बाहर भऽ गेलाह । ओ श्री बैजू जीकेँ अध्यक्ष पदसँ हटबाक धमकी देलथिन आ ई कहलथिन जे शरदिन्दु चौधरीक नाम जँ 'सम्मान सूची' सँ नहि हटाओल जायत तँ ओ जहर खा लेताह । हारि कऽ बैजूजी हमर नाम वापस लऽ लेलनि । आब बेर दोसर पक्षक छल । एकर विरोधमे सर्वश्री भीमनाथ झा जी आ श्री फूलचन्द्र मिश्रजी जूरी रूपमे तँ इस्तीफा दइये देलथिन विद्यापति सेवा संस्थानसँ सेहो सम्बन्ध तोड़ि लेलनि । भीम बाबूकेँ निर्णय वापसी एतेक खराब लगलनि जे समितिक सचिव श्री वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' जीकेँ एकटा दीर्घ पत्र लिखलथिन जाहिमे आग्रह कयलथिन जे जँ हम मरि जाइ तँ समिति शोक सभा तक आयोजित नहि करय किएक तँ एहिसँ हमर आत्माकेँ कष्ट होयत । जे-से ।

हमरा सम्मान नहि भेटल मुदा ई सभ टा घटना दरभंगाक सभ अखबारमे सप्ताह भरि प्रकाशित होइत रहल । एहि विवादित दीर्घ चर्चसँ लोकके पता चलि गेलैक जे हम के छी आ सम्मान देअयवला संस्थाक शीर्ष नेतृत्वपर केहन लोक सभ छथि । हम आभारी छी ओहि सभ सदस्यक जे हमर विरोध कयलनि आ जे सभ हमर नामक अनुशंसा कयलनि । कचोट अछि जे ओ सदस्य सभ जिनका ओहि वर्ष सम्मानित कयल गेलनि से सभ मीडियामे ओतेक नहि उधिया सकलाह जकर ओ अधिकारी छलाह । ई दीगर बात अछि जे हुनका लोकनिकेँ जे ताम्रपत्र ओहिवर्ष देल गेलनि से जखन पटनामे आयोजक लोकनिसँ नहि बनबाओल भेलनि तँ हमही बनबाकऽ दरभंगा पठा देलियनि ।

अखबारमे ओहि क्रममे छपल समाचार सभ हमरा आइयो प्रेरित करैत अछि आ कहैत अछि जे जीवनमे ओहन कोनो काज नहि करी जाहिसँ सम्मान ओ पुरस्कारक लपेटमे आबि सकी, कारण सम्मान-पुरस्कारक माला पहिरयवला आब नव 'जीन'क समाज बनि गेल छैक जकरा ई चाहबे करियैक से चाहे जेना होअय । हँ, बैजू जी द्वारा हमर नाम वापस लेबाक निर्णय सेहो उचित आ न्यायपूर्ण लगैत अछि । कारण, शरदिन्दु

चौधरी सन-सन अदना व्यक्तिकें संस्था सम्मान करय वा नहि से ततेक महत्वपूर्ण नहि अछि जतेक महत्वपूर्ण अछि संस्थाकें टुटबासँ बचायब। आदरणीय श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' संस्थाक अध्यक्ष बनल रहलथिन तँ संस्थाक मान-मर्यादा कायम रहलैक अन्यथा जुलूम भऽ जइतैक। सत्ते, श्री वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' दरभंगाक एकटा विराट संस्थाकें 'वैद्यनाथ' बनि बिखरयसँ बचा लेलनि। हम एहि लेल हुनक सदा आभारी रहबनि।

6/2/2019



हम नहि कहि सकैत छी...

हिन्दीमे एकटा मोहबरा छैक-अकेला चना भांड़ नहीं फोड़ता' से जनैतो हम मोटा-मोटी यैह प्रयास करैत रहलहुँ जे कोनो संस्थाक सदस्य नहि बनी जे किछु कऽ सकी से स्वयं करी । आ हम एहिमे सफलो रहलहुँ । जगता बाबू (श्रीजगदानन्द झा) बहुत प्रयास कयलनि जे हम चेतना समितिक सदस्य बनि जाइ । हुनक कहब छलनि जे ओ सदस्यता-शुल्क दऽ देथिन, हमरा मात्र आवेदन फार्म पर हस्ताक्षर करबाक अछि। एहने आग्रह आदरणीय डा० बासुकीनाथ झा जी सेहो कयलनि । मुदा जैँ कि हम अडिग रही तेँ चेतनाक सदस्य नहिये बनलहुँ ।

एही प्रकारें 'अरिपन'क सदस्य बनबा लेल सेहो हमरा पर बेस जोर देल गेल । आदरणीय मन्त्रेश्वर झा जी आ मधुकान्त झाजी कैक मीटिंगक समयमे लोकक सोझांमे फार्म पर दस्तखत करबा लेल बाध्य कयलनि लेकिन हम कोनहुना ससरि गेलहुँ ।

सदस्य नहि बनबाक आर कोनो कारण नहि, मात्र एकेटा छल जे क्यो कोनो बात पर संस्था वा संस्थाक पदाधिकारीकेँ 'जे-से' कहि दैत छैक से हमरा बर्दाश्त नहि होइए । आ खासकऽ जँ हम कोनो संस्थाक सदस्य रहब तँ ओ बात हमरो सुनय पड़त आ से हमरा सह्य नहि । आखिर एना संस्था करबे किए करत जे क्यो आंगुर देखौतै ! मुदा ईहो बात नहि जे कोनो संस्थासँ हमरा परहेज रहल । चेतना समिति, अरिपन, भंगिमा सभ संस्था सँ हमर नीक सम्बन्ध रहल अछि । हमर जे क्षमता अछि ताहिसँ सहयोग करबामे हम कहियो पाछाँ नहि हटल छी से ओहि संस्थाक लोके सभ कहि सकैत छथि आ प्रायः तेँ सभ संस्थाक क्रिया कलाप मे हमर सक्रिय सहभागिता रहल अछि ।

कोनो संस्थाक सदस्य नहि बनब से निश्चय छल मुदा कोन दुरमतिया घेरलक जे मैथिली लेखक संघक सदस्य बनि गेलहुँ । भेल

एना जे हम, विनोद कुमार झा, अजित आजादक निर्णय भेल जे लेखक-साहित्यकारकेँ कतहु मान-सम्मान नहि भेटैत छैक तेँ एकटा एहन संस्था बनाओल जाय जाहि माध्यमसँ साहित्यकारक हक एवं सम्मानार्थ स्वर उठयबाक एवं काज होयबाक मार्ग प्रशस्त होअय । एही निमित्त हम आ विनोद कुमार झा निर्णय करय लगलहुँ जे कोनो की करी । आपसमे निर्णय भेल जे हम सचिव बनब आ अध्यक्ष पद लेल मन्त्रेश्वर झाजीसँ आग्रह कयल जाय । विचारोपरान्त हम आ विनोदजी श्री मन्त्रेश्वरजी ओतय गेलहुँ । ओतऽ जाइते ओ अपन विचार प्रकट कयलनि जे शरदिन्दुजीकेँ बड़ काज रहैत छनि तेँ विनोदेजी सचिव बनथि । हमरा लेल धनि सन, संस्था चलओ । विनोदजी सचिव बनबा लेल तुरत तैयार भऽ गेलाह । पुनः सभ गोटेक विचारेँ नरेन्द्र झा जीकेँ कोषाध्यक्ष बनयबा पर सहमति भेल ।

आब संस्थाकेँ अमली जामा पहिरयबा लेल एकटा सभा बजाओल गेल जाहिमे पटना स्थित प्रायः सभ साहित्यकार उपस्थित छलाह । जेना कि पूर्व निर्णय छल तहिना सभामे मन्त्रेश्वरजीकेँ अध्यक्ष आ विनोदजीकेँ सचिव बना पूर्ण अधिकार देल गेलनि जे ओ संस्थाकेँ निबन्धित कराबथि आ कार्यकारिणीक गठन करथि । यद्यपि एहि निर्णयपर अशोकजी (कथाकार-साहित्यकार), भारद्वाज जी आर कैक गोटे विरोध करैत कहलनि जे निर्णय कयले छल तँ आमसभा किएक बजौलहुँ ? तथापि पुनः सर्वसम्मति सँ श्री नरेन्द्र झाकेँ कोषाध्यक्ष बनबैत संस्थाक 'बाइलाज' बनयबाक भार देल गेलनि । आब प्रश्न छल जे पहिने एगारहो सदस्य बनथि तखन ने 'बाइलाज' बना आवेदन देल जाय । एहि क्रममे एगारह सय टाका लऽ सदस्य बनयबाक अभियान चलल जाहिमे सर्वश्री मधुकान्त झा, डॉ. सत्यनारायण मेहता, अग्निपुष्प, कुणाल, डा. इन्द्रकान्त झा, शशिबोध मिश्र शशि आदिक नाम शामिल कयल गेल आ पंजीयन लेल आवेदन देल गेल । लगभग साल भरिमे संस्थाक पंजीयन भेल सेहो लऽदऽ कऽ मुदा एकर जँ श्रेय अछि तँ मात्र विनोदजीकेँ बाकी सदस्य लोकनि बबुआने बनल रहलाह ।

संस्था बनल, मीटिंग-सीटिंग भेल मुदा ई अपन लक्ष्यसँ भटकि गेल । एकाध टा नीको काज भेल मुदा दुइये वर्षमे ई उर्ध्वशांस लेबऽ लागल । पुनः दू वर्ष पर चुनावक बेर आयल तँ मन्त्रेश्वर झाजी हमरा विवश कऽ देलनि जे अहाँ सचिव लेल ठाढ़ होउ, विनोद जीकेँ रिप्लेश करू । एहीठाम हमरासँ चूक भेल आ हम राजनीतिशास्त्र पढ़ियो कऽ राजनीति नहि बूझि सकलहुँ । हमर ई डेग विनोदजीकेँ अप्रिय लगलनि। हमहूँ ठाढ़ भेलहुँ आ विनोदजी चुनाव पदाधिकारी होइतो सचिव पद लेल ठाढ़ भऽ गेलाह । ओ पूरा चुनावी तिकड़मक संग मीटिंगमे (अपन पूरा ताकतिक संग) अयलाह । हम सामान्य रूपेँ उपस्थित भेलहुँ । यद्यपि ओहि मीटिंगमे जहिया चुनाव निर्धारित छल तहिया अनेक आरोप मन्त्रेश्वरजीपर लगाओल गेल । हमरा से सह्य नहि भेल । आपसमे हम सभ दू गोल भऽ गेलहुँ से देखि बड़ कचोट भेल । लेखक-साहित्यकार संवेदनहीन भऽ गेल छल से ओतहि देखबामे आयल । महिलागण बुद्धिजीवी कहयबाक लौलमे एखनो मूर्तिये टा छथि (दुर्गा, काली, सरस्वती नहि), सीता जकाँ विवश, सेहो ओतहि देखल-प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', इन्दिरा झा आ पन्ना झाक रूपमे । अजितक ललकारा भेटल चुनाव लड़बाक लेल, हमरा स्मरण भऽ आयल-युद्धक विरोधमे बुद्धक प्रतिहिंसा । एहन स्थिति मे चुनाव लड़ब हिंसा होयत । विचारक हिंसा, आचारक हिंसा, मानवीय संवेदनाक हिंसा । हम चुनाव नहि लड़ब से निर्णय करैत ओतऽ सँ निकलि जाइत छी । हमर चुनाव लड़ब राजनीति होइत से हमरा सह्य नहि छल, आइयो नहि अछि । लेखक संघक राजनीति चलैत अछि, चलि रहल अछि । आइ निबंधित मैथिली लेखक संघ (चारि बेरक चुनावकेँ टारैत) स्थायी अध्यक्ष, स्थायी सचिवक संग जीवि रहल अछि आ प्रशंसा लोढ़निहार व्यक्ति सभ जे हमरा सँ सहमत भऽ दूरी बनौने रहथि से पुनः लेखक संघ दिस टहलऽ लगलाह अछि ।

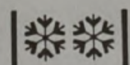
आइ हमहूँ छी, ओहो सभ छथि, सम्पूर्ण साहित्यकार-लेखक वर्ग छथि मुदा 'संघ' कतऽ अछि से सभ ताकि रहल अछि । हम सदस्य किएक बनलहुँ से सोचि रहल छी, सदस्य बनियो कऽ असफल किएक

भऽ गेलहुँ से सोचि रहल छी-अपन जीवनक अनेक असफलतामे एहू विषयकेँ सूचीबद्ध कऽ आहत भऽ रहल छी ।

मोन पड़ैत अछि विनोदजी (सरकार)क ई वाक्य-अहाँकेँ उचितवक्ता बनबाक कोन काज अछि । 'मोन पड़ैत अछि श्री नरेन्द्र झाजीक परामर्श-अहाँ मैथिली पोथीक दोकान खोललहुँ अछि, राजनीतिमे नहि पड़ू, चुनाव नहि लड़ू ।' मोन पड़ैत अछि अपन दोकानमे बैसल-डॉ. विद्यानाथ झा 'विदित'क आग्रह-'हमरा अहाँक सक्रिय सहयोग चाही ।' मोन पड़ैत अछि अपन वक्तव्य-लेखक संघक माध्यमसँ हम सभ मीलि लेखकक प्रति संस्था सभमे जे दुर्भावना व्याप्त अछि तकरा दूर करब ।'

ई हमर दुर्भाग्य जे आब हम ककरो ई नहि कहि सकैत छिऐक जे हम कोनो संस्थाक सदस्य नहि बनलहुँ मुदा हम एक दिन ई सुनि चौंकि उठैत छी जे डा. रमानन्द झा 'रमण' बजालह अछि जे नीक कयलनि पंडित गोविन्द झा आ शरदिन्दु चौधरी जे कोनो संस्थाक सदस्य नहि बनलाह ।

1/3/2016



युवा शक्तिकेँ बूढ़क चुनौती

आब हम साठिक वयस पार कऽ औपचारिक रूपेँ वृद्धक श्रेणीमे आबि गेल छी । ओना पाकल केसक कारणे हमरा बूढ़क श्रेणीमे कतोक गोटे गत पन्द्रह-बीस वर्षसँ वृद्ध बुझैत-मानैत छथि । मुदा आदरणीय लेखनाथ मिश्रजी, बासुकीबाबू, इन्द्रकान्त बाबू सन प्राध्यापक आ आदरणीय मन्त्रेश्वर बाबू, भीमनाथ बाबू सन लेखक आ उपाध्यायजी ओ चक्रधर सिंह जी सन अपन पड़ोसी लोकनिकेँ देखैत छियनि तँ अपन वृद्ध होयबाक सोचपर बेस तामस उठैत अछि । ओ लोकनि एखनो चुस्त-दुरूस्त छथि, सक्रिय छथि तँ हुनका लोकनिसँ बहुत छोट होइतो हम कोना बूढ़ भऽ गेलहुँ !

हँ, बूढ़ होयबाक बातसँ लगपासमे रहि रहल वृद्धलोकनिक स्थिति-परिस्थिति, अखबारमे नित्य-प्रति छपि रहल वृद्धक उपेक्षा-गंजनक समाचार तथा वृद्ध लोकक मजबूरीमे जीवन-यापनक आधार देखि ठीके हम एखनेसँ भयभीत भऽ उठल छी । पेन्शनभोगी मित्रलोकनि, जे एखन देहदशासँ ठीक छथि केँ देखि कऽ हूबा बनैत अछि जे कोनो बात नहि पेन्शन नहि भेटैत अछि तँ की भेल मैथिली पोथीक टुकटुकाइत दोकानसँ कहुना बुढ़ौती खेपि लेब । मुदा जखन हुनका-लोकनिक पेन्शनक बाँट-बखरा, छिना-झपटी आ ओहि लेल मारि-पीट सेहो होइत देखैत छियनि तँ लगैत अछि जे ओ हुनक जीवन-निर्वाह भत्ता नहि गारि-मारिक उठौना छनि, उछन्नर-गंजन सहबाक कोरामिन छनि । एहिसँ नीक तँ स्वेच्छा मृत्युयेक परमिट भेटैत । हँ, किछु वृद्धि दम्पत्तिक खुशहाली, पारिवारिक मेल-मिलाप देखि इर्ष्या होइत अछि।

दस वर्ष पूर्व एकटा कथा लिखने रही - 'समय-संकेत' जाहिमे बेरा-बेरी हाथ, पयर, आँखि-कान, दाँतक चर्च करैत कहने रही जे अपन शरीरक अंग सेहो समय अयलापर संकेत दैत अछि जे आब हम काज नहि करब, अपन वैकल्पिक व्यवस्था कऽ लियऽ । आँखि कहलक चश्मा लगाउ, दाँत कहलक नकली सेट धारण करू, पयर कहलक ठेंगा लऽ कऽ चलू । माने ई जे अहाँ जे अपनापर, अपन शक्तिपर बड़ गुमान करैत छी से सोच मोनसँ निकालू,

कारण-आब अहाँ डेग-डेगपर पर-आश्रित होयबाक मार्ग दिस अग्रसर भऽ गेल छी । तेँ आब चेति जाउ । मुदा मोन, जे सभसँ तेज चलैत अछि, से तैयार नहि भेल आ बाजि उठल - 'बूढ़ भेलहुँ तँ दुरि भेलहुँ' सन बात नहि मानब ।

ओना असली बात पूछी तँ हृदयसँ हम अपनाकेँ बूढ़ मानि लेने छी मुदा अधिकांश वृद्धक अवकाशोपरान्तक स्थिति देखि कऽ अपन कार्यसँ अवकाश लेबाक साहस नहि भऽ रहल अछि आ तेँ लोकक बेरा देल गेलाक बादो दू टा पाइ अर्जन करबा लेल आइयो 'पीच' पर डटले छी । हँ, एहि बातसँ अथवा व्यवस्थासँ निश्चिन्त छी जे हमर (बुढ़बा-बुढ़ियाक) बँटबारा नहि होयत । कारण-बालक एक्केटा छथि, संग राखथि वा फराक कऽ देथि । दुनू स्थितिमे दुनू हाथमे लड्डूये रहत । ई बात हमरा लेल एतेक संतोषप्रद अछि जे साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता सेहो हमरासँ इर्ष्या करताह । कैक गोटे पुरस्कार पाबि लेलनि, ढ़ौये-ढ़ाकी कमा लेलनि मुदा बुढ़ारीक बँटबारामे बँटा गेलाह । पत्नी एक बेटाक डेरापर पटनामे आ अपने दोसर बेटा लग दरभंगामे । प्राणोत्सर्गक बेरमे एक-दोसराक मुंह नहि देखि सकलाह -'सीताराम-सीताराम' अलापक की अर्थ रहि गेल !

धन-सम्पत्तिक रूपमे बँटबारा होअय बूढ़ा-बूढ़ीक तँ बड़ बेस मुदा कबाड़ीक रूपमे ढोबाक स्थिति भऽ जाय तँ धिक्कार अछि एहि समाजक । माझ दरभंगाक एकटा साहित्यकार-पदाधिकारी चारि भाइ अपन मायकेँ त्रैमासिक पत्रिका जकाँ तीन-तीन मास पार लगाकऽ ढोइत रहलाह । कोनो भाइकेँ भार लेबामे दसो दिन देर होइन तँ मैथिल पाठक जकाँ व्यवस्थापक पर टूटि पड़ैत छलाह । प्रायः बूढ़ि माय धर्मपरायण महिला छलथिन, हालेमे अपन नश्वर शरीर त्यागि चारू भाइकेँ मुक्त कऽ देलथिन अछि । कहाँदन ओ लोकनि आब फैलसँ घर बना रहलाह अछि दरभंगामे अवकाश प्राप्त कयलाक बाद । उमेद छनि जे अपन बुढ़ौती नीक जकाँ कटतनि ।

मुदा ईश्वर हमरा प्रायः वरदान देने छथि । आर्थिक भने जे कष्ट होअय-बुढ़ारीमे दुनू परानी संगे रहब, ने बँटबारा होयत आ ने त्रैमासिक पारमे खेवनहार बदलैत रहत । हम पूछैत छी माय-बापक बँटबारा होयबाक चाही ? मुदा हाय रे हमर मैथिल समाज-मिथिलाक प्रायः सभ गाममे अनेक बूढ़ा-बूढ़ी बँटबाराक शिकार भऽ अपन वृद्धावस्थाकेँ धिक्कारि रहल छथि, सामाजिक सभ्य व्यवस्थाकेँ श्रापि रहल छथि ।

'बूढ़ भेलहुँ तँ दुरि भेलहुँ'क मान्यता दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि मुदा एकर परिणाम की भऽ रहल अछि से बुझबाक पलखति ककरो नहि छैक। नव लोक जा-जा बूझत ता-ता ओहो बूढ़ भऽ जायत संवादहीनताक कारणे।

घरमे बूढ़-बुढ़ानुशक नहि रहने अपन खास 'फास्ट फूड' निमकी, खजुर, ठकुआ, लाइ-चुरलाइ, तिलबा आदि घर छोड़ि दोकानमे जा कऽ बसि गेल। काका, बाबा, नाना-मामाक संग जे नेना भुटका खेत-खरिहान गाछी-बाड़ी जाइत छल से आब मम्मी-पापा संग 'मॉल' जाइत अछि। फ्रायम, चिप्स आ कार्नफ्लेक्स पर लपकैत अछि मुदा जाहि धान, आलू आ मकईक बालिसँ ई सभ बनैत अछि तकर गाछो नहि चिन्हैत अछि। घरमे आब अचार नहि बनैत अछि, दलिपूड़ी, बड़-बड़ी नहि बनैत अछि। दलिपिठ्ठी आ बगिया धीयापूता चिन्हत की नहि से इन्टरनेटे बता सकैत अछि। हमर दादी शहरमे रहैत छलीह तेँ ओ आम, कहटर, करैला आ परोड़क अंचार बनबैत छलीह। हमर नानी गामसँ करौना, अमरा, ओलक अचार पठबैत छलीह। हुनक कैक टा कोहामे अमौटक धरिका भरले रहैत छल, से जे क्यो ओतयसँ आबय तँ हमरा सभ लेल आनय। ओहिना स्मरण अछि जे माँसँ अचार मंगियनि तँ स्पष्ट करय पड़य जे कथीक अचार चाही। मुदा आब ने ओ युग आ ने ओ कराह। अचार माने एम.डी.एचक अथवा आन कोनो कम्पनीक। करौना आ अमरा की होइत छैक से नेना कोना बूझत। जतऽ लोक आब 'गोइठा' अमेजनसँ 200/- टका गंडा मंगबैत अछि ओतऽ करौना लेल बिगवास्केटक ब्राण्ड अम्बेसडर शाहरूखसँ जनतब भेटत की नहि से के कहत। दादा-दादी, नाना-नानी जी.एस.टी.क दबाब बढ़लासँ वृद्धाश्रममे निर्यात भऽ रहल छथि आ नेना भुटकाक बुद्धिक बखारीकेँ भरबा लेल मोबाइल इन्टरनेट सोंपल जा रहल अछि।

पूराक पूरा मैथिल समाजकेँ बूझल छैक जे हम जिद्दी छी, हठी छी, अपन बातपर कायम रहयवला छी। तेँ हम ई स्वीकार करैत छी जे हम बूढ़ भऽ गेल छी मुदा बूढ़ भऽ कऽ दुरि भऽ गेलहुँ से मानबा लेल कथमपि तैयार नहि छी। हम घोषणा करैत छी हम बुद्धिक बखारी छी आ से एहि कारणे जे हम जे ज्ञान प्राप्त कयलहुँ अछि, काज कऽ कऽ, भोगि कऽ। अपने हाथे बहुतो निर्माण कयने छी जाहिमे नीक-अधलाह भोगैत आब पकठोस भेल छी, तपल-तपायल अछि हमर ई ज्ञान। तेँ जिनका ज्ञान प्राप्त करबाक इच्छा

होइन, जे ज्ञान पिपासु होथु से हमर अनुभवक लाभ लऽ सकैत छथि । हम ईहो कहि दैत छी जे हमरा ई ज्ञान 'ऑन लाइन' प्राप्त नहि भेल अछि । हमरा एहि लेल कठिन परिश्रम करय पड़ल अछि । तेँ जिनका अजीर्ण भऽ गेल होइन ज्ञानानार्जनक ऑन लाइन सेवनसँ, अपच भऽ गेल होइन से एहि बूढ़ासँ अवश्य मार्गदर्शन प्राप्त करथि । ऑन लाइन 'मंत्र' जकाँ टाका पठा कऽ वस्तु प्राप्त कयल जा सकैछ ज्ञान नहि ।

हँ, हम अपनाकेँ बूढ़ मानैत स्पष्ट कहि दी जे हम जतऽ रहब ततहिसँ आशीर्वाद देब-अहाँकेँ नीक होअय, और्दा बढ़य, सुखी रही, सम्पन्न रही, हँसैत-खेलाइत रही । हम सदति ई कामना करैत रहब, अहाँ लेल भगवानकेँ गोहरबैत रहब भने अहाँ हमरा स्मरणो नहि करी । मुदा जँ अहाँ 'बूढ़ मानैत दुरि भऽ गेलहुँ' हम, से मानैत छी तँ एहि बुढ़ापोमे हम अहाँकेँ चैलेन्ज दैत छी से कऽ कऽ देखा दी तँ पुरुषार्थीबली मानब, सामर्थ्यवान-भाग्यवान मानब -

हम जे अहाँपर प्रेम-स्नेह-वात्सल्य-ममताक चादर ओढ़ौने रही, अहाँ लेल अपन सुख-शान्ति, दिन-रातिक चैन लुटौने रही; अपन खूनकेँ पसेना जकाँ बहाकऽ अहाँकेँ अंकुरौने, पनुघौने, चतरौने रही; त्याग-करुणा आ समस्त संवेदनात्मक झरनासँ अहाँक जे निश्च्छल-धवल-पवित्र रूपक परिकल्पना अपन मोनमे गढ़ने रही तकर प्रतिरूप हमरा 'आन लाइन' पठा दी तँ हम एहू बुढ़ारी मे ओकरा पाबि फेर सँ जवान भऽ जायब । ठीके कहैत छी हम पुनः जवान भऽ जायब किएक तँ हमर भाव इन्द्रकान्त बाबूक 'भिखमंगनी'वला भाव नहि अछि जे मात्र अपने हृष्ट-पुष्ट होयबाक व्योंत धरबैत अछि, हमर भाव मैथिलीक केष्करो बाबूवला भाव नहि अछि जे सभठाम तेगार धरा अपने फल पयबाक प्रत्याशामे रहय । हमर भाव समाजक प्रति सकारात्मक भाव अछि । बुढ़ारीमे भने हम निष्फल बूझल जाइ अहाँ सभक नजरिमे मुदा स्मरण राखब अहाँ हमरे बीजक फल छी जकरा ने हम नुका सकैत छी आ ने अहाँ मिटा सकैत छी । देखबाक अछि जे अहाँ हमर भाव बूझि 'चैलेन्ज' स्वीकार करैत छी कि हमरा बाद 'संकर बीज'क अपन खेती कऽ युवा वृद्धक रूपमे अभिशप्त भऽ अतिवृद्ध होयबाक इन्तजार करैत छी ।



हमर दुर्गुण आ क्रोधक दुष्प्रभाव

मैथिलमे जँ किछु दुर्गुण छैक तँ गुण–सद्‌गुण ततेक छैक जे केम्हरोसँ देखबैक तँ आन भाषा–भाषी सँ बेसीये बुझायत । हँ, एतऽ हम ईहो कहय चाहब जे आन मैथिल जकाँ हमरोमे बहुत बेसी दुर्गुण अछि। किछु आदतियो एहन अछि जकरा दुर्गुणे कहल जयबाक चाही ।

सभसँ पहिने तँ ई जे हम बहुत कम ठाम जाइत–अबैत छी जाहिसँ लोक हमरा घमंडी आ स्वार्थी बुझैत अछि । ओना अपना हिसाबें हमरा नहि बुझाइत अछि जे हम घमंडी अथवा स्वार्थी छी । हँ, किछु क्रोधी स्वभावक जरूर छी जाहिसँ हमरा आइ धरि घाटे–घाटा भेल अछि। जँ कोनो बातपर अड़ि जाइत छी तँ फेर बूझू जे पाछाँ हटब मुश्किल भऽ सकैत अछि । एहि क्रोधक अवस्थामे किनको हमर व्यवहार खराप लगैत होइन से संभव । ओना हमर ई क्रोध हमरे खाइत आयल अछि आइधरि । एकर कारण ई अछि जे हमरा जखन क्रोध चढ़ैत अछि तँ हम चुप भऽ जाइत छी आ ओकरा शान्त करबा लेल अपन शरीरपर अत्याचार करैत छी । एहि अवस्थामे भोजन नहि करब, शारीरिक श्रम अत्यधिक करब, पैदल चलब आदि बढ़ि जाइत अछि आ परिणामस्वरूप रातिमे निन्द नहि होइत अछि । जँ कने–मनेमे क्रोध शान्त भऽ गेल तँ ठीक अन्यथा धीरे–धीरे ई ब्लड प्रेशरक रूपमे हमरापर सवार भऽ जाइत अछि आ हमरा सहित हमर पूरा परिवार परेशान भऽ जाइत अछि ।

सभसँ दिक्कत ई होइत अछि जे हमर ई क्रोध हमरा कतय आ कखन होयत से हम अपनो नहि बुझैत छिऐक । हमरा नजरिमे जखन कोनो बात अथवा काज अनसोहांत लगैत अछि तँ क्रोधक आगमन होइछ। ओना युग कहैत छैक जे अपनासँ मतलब राखू–आन किछु करैत अछि तँ ओहिपर ध्यान नहि दिअऽ । मुदा हमरासँ से नहि होइछ । घर–परिवारक बात होइछ तँ ओ लोकनि हमरापर दया करैत चुप रहैत

छथि मुदा समाजक लोक हमर एहि दुर्गुणपर किएक चुप रहत !

हमर सभसँ पैघ दुर्गुण ई अछि जे हमरा जखन ई देखाइत जाहिसँ समाजक अहित होइक अथवा उचित नहि होइक तँ हम ओकरा कतहु ने कतहु लिखि दैत छिऐक । हमर एहि लेखनसँ ओहि पक्षक योजनाक कार्यान्वयनमे बाधा भऽ जाइत छैक संगहि ओ समाजक नजरिमे कने खसि पड़ैत अछि ।

एक बेर 1990 लगभगमे हमरा पता लागल जे चेतना समितिक किछु लोक मिलि कऽ स्थायी अध्यक्ष होअय तकर योजना बना रहल छथि । एकर कागज-पत्रक तैयारी कऽ लेल गेल छल । लगले बैसार होमऽवला छल जाहिमे ओकरा अमली जामा पहिरा देबाक छलैक । हमरा ई बात अनसोहांत लागल, क्रोध सेहो उठल, मुदा करितहुँ की ! ओहि समयमे कोनो तेहन पत्र-पत्रिका नहि छल जाहिमे ई छपैत । मिथिला मिहिर बन्द छल । आरंभ (सम्पादक-राजमोहन) निकलैत छल । भाइ साहेबसँ गप्प कयलहुँ । ओ तैयार भऽ गेलाह आ संगहि दू चारि दिनमे निकलि जाय से तैयारी कयलनि । आरंभक अंक चेतना समितिक मिटिंगसँ पांच छौ दिन पहिनहि निकलि गेल । ओहिमे छपल छल-'चेतना समितिकेँ जेबी संस्था बनयबाक षडयंत्र' । भाइ साहेब 'आरंभ' लऽ समिति लग जा लोक सभकेँ देलथिन । लगले ई बात समितिक सदस्य सभमे पसरि गेल । मिटिंगमे खूब एकर विरोधमे हो हल्ला भेल आ स्थायी अध्यक्षक योजना विफल भऽ गेल । आरंभक अगिला अंकमे प्रस्ताव तैयार कयनिहार आजुक एकटा कथाकार ओहि समाचारक विरोध मे प्रतिवाद देलथिन जकरा संगहि ओकर जबाव हम देलिऐक जाहिमे किछु तथ्य रहैक । ओहि जबावमे हम लिखने रहिऐक जे जे तथ्य सभ हमरा लग अछि तकरा पत्रिकाक अग्रिम अंकमे हम प्रकाशित करब आ ताहिसँ जँ समितिक अस्तित्वपर खतरा उत्पन्न भऽ जाइक तँ हमरा एकटा मैथिलक रूपमे दोषी नहि मानल जाय । तेँ समिति एहि हेतु तैयार रहय । बादमे हमरा किछु गोटे एना करबा लेल मना कयलनि आ समिति सेहो अपन रुखिमे परिवर्तन कयलक । ई तँ हमरा बादमे पता चलल जे

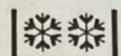
हम पत्रकार नहि रहितहुँ तँ हमरा संग किछु गोटे मारपीट सेहो करितथि। समितिक एकटा पूर्व सचिवक विरोध कयलापर हुनक कोना अभद्र रूपे गंजन भेल छल से लोकके बूझल छैक तथापि से स्थिति हमर नहि भेल। एहन-एहन कैकटा मामिला भेल अछि जाहि कारणे हम अपन अहित अपने हाथे करबा लैत छी। प्रायः एही घटनाक बादसँ चेतना समितिक किछु सदस्य आइ धरि हमरा टेढ़ आँखिये देखैत छथि जखन कि सत्य ई अछि जे चेतना समितिक कोनो सदस्य जतेक पसेना बहौने छथि ताहिसँ कम हमरो योगदान नहि अछि। बहुत कम गोटेकेँ ई बूझल होयतनि जे स्मारिकाक संपादन तँ आठ-नौ बेर कयनहि छी संगहि कैक गोट पोथी जे समिति प्रकाशित कयने अछि तकर अघोषित सम्पादक हमहीं रहल छी। एहि विषयमे जँ डॉ. कलानाथ मिश्र जी केँ पूछल जानि मधुकान्त जीकेँ पुछल जानि तँ ओ सभ बेस प्रकाश दऽ सकैत छथि, हम अपना दिससँ कतेक कही।

जखन क्यो मैदानमे उतरैत अछि तँ ओकर गुण दोषक चर्च जरूर होइत छैक। हमरो होयबाक चाही आ से खुलि कऽ होयबाक चाही - हमर व्यवहारक, हमर संस्कारक, आचार-विचारक, वैयक्तिक, चारित्रिक, सभ कथुक। ओना एखन धरिक जे हमर जीवन अछि ताहिमे हम अपन भलाइ लेल ककरो गरदनि नहि कटलिऐक अछि, ककरो सँ उपरौंझ कऽ काज नहि छिनलिऐक अछि आ ने ककरो हक मारबा लेल कतहु ठाढ़ भेल छी। हँ, अपन मान-सम्मान लेल अवश्य साकांक्ष रहैत छी, मुदा भोग-विलासक प्राप्ति लेल मारामारी करबामे विश्वास नहि करैत छी। प्रायः यैह कारण अछि जे शेखर प्रकाशन ओहन कोनो प्रतिस्पर्धामे भाग नहि लैत अछि जाहिमे शामिल भऽ येन-केन प्रकारेण धन अर्जन कयल जाय।

लहेरियासरायक एकटा युवा लेखक/पत्रकार छद्मनामे अखबारमे लिखलनि जे साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी आ चेतना समितिकेँ भयादोहन कऽ हम कमाइत छी मुदा हुनका के कहतनि जे एहि सभ संस्थाकेँ हम प्रतिवर्ष लाख टाकासँ ऊपर दैत छिऐक हुनका जकाँ...

फौदारी कऽ मारा-मारी नहि कयने फिरैत छी । हम स्वीकार करैत छी जे हम अपन दुर्गुणक कारणे गुटबाजी नहि करैत छी, संबंधवादक पोषक नहि छी, घूस दऽ कऽ मैथिलीक क्षेत्रमे काज नहि कऽ सकैत छी आ ने अपनासँ अयोग्य व्यक्तिक चमचागिरी कऽ कऽ धन अर्जन कऽ सकैत छी । जँ ई सभ दुर्गुण अछि तँ हम स्पष्ट कऽ देबऽ चाहैत छी जे ई सभटा दुर्गुण अपना संगे लऽ कऽ जायब ।

14/8/18



समय-सालक जन्म आ साहित्यिक-राजनीतिक कुचक्र

सत्य-सत्य होइत छैक फूसि-फूसि। हम जेँ कि ई प्रयास करैत रहलहुँ अछि जे सत्यक संग चली, कमजोर, खगल आ दबल लोकक संग दी, तेँ बेसी काल कुगौरमे फंसि जाइत छी। कखनो काल नीक लोकक संग देलापर नीको काज भऽ जाइत अछि। 1997क अंतमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक़ अभावक कारणे मैथिली गतिविधि ठमकि गेल छल। किछु गोटेक विचार भेलनि जे आपसी सहयोगसँ एकटा पत्रिका निकालल जाय। एहि अभियानमे लगभग एक दर्जन अभियानी पुरुष शामिल भेलाह। मुदा कार्यान्वयनक जखन समय आयल तँ सभ निपत्ता-बचि गेलहुँ हम आ मधुकान्त झाजी। दुनू गोटे बैसलहुँ आ निर्णय लेलहुँ जे पत्र आब निकालल जाय। पत्रक नाम राखल गेल 'आइ-काल्हि', प्रकाशन तिथि तय भेल फरवरी 2000। पत्रिका द्विमासिक निकलत से विचार भेल।

पत्रिकाक स्वरूपक विषयमे स्पष्ट कऽ लेल गेल जे ओ राजनीतिक-सामाजिक होयत। मुदा जेँ कि मैथिलीक रहत तेँ किछु-किछु साहित्यिक सामग्री सेहो रहत। आलेखक मांग कयल गेल। लेखक लोकनि किछु आश्वासन देलनि, किछु हँसी उड़ौलनि तँ किछु गोटे चोट की, बाधा पहुँचयबाक सेहो प्रयास कयलनि। विनोद बिहारी लाल तँ पत्रे पठा देलनि ई लिखैत जें चलू 'सम्पादक रूपमे इतिहासमे अहाँक नाम अयबाक सख पूरा भऽ जायत।' मुदा हुनका ई लिखैत काल ई स्मरण नहि रहलनि जे ताधरि हम दस वर्ष मिथिला मिहिर आ 6 वर्ष आर्यावर्तक सम्पादक मंडलमे काज करैत चिन्हार भऽ गेल रही जतऽ छपबा लेल ओ लाइनमे लागल रहैत छलाह।

मुदा हमरा सभक दृढ़ निश्चयक आगाँ किछुओ किनको नहि चललनि आ फरवरी 2000 सँ आइ-काल्हि निकलब प्रारंभ भेल से चारि अंक बादसँ समय-सालक नामे अबाध रूपें चलैत 14 वर्ष पूरा कऽ सभक मुंह बन्द कऽ देलक । एहि समयमे मैथिलीमे पत्रकारिता कयल जा सकैछ, ओकर प्रभाव देखाओल जा सकैछ से जँ अनुभव करबाक किनको मन होइन तँ पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर सँ लऽ आजुक बाजीगर प्रोफेसर लोकनिसँ, प्रतियोगी परीक्षार्थी लोकनिसँ पूछि सकैत छथि जे समय-सालक मैथिलीमे की महत्व छलैक ।

2001 ई.मे स्व. बबुआ जी झा अज्ञातकेँ 'प्रतिज्ञा पाण्डव' नामक महाकाव्यपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार देबाक घोषणा भेल । भाइ साहेब एवं हुनक पार्टी एकर विरोधमे उठि बैसलाह । हस्ताक्षर अभियान चलल जाहिमे एते धरि दावा कयल गेल जे जाहि 'लुगदी साहित्य' पर ई पुरस्कार देल गेल अछि जे पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित नहि अछि । विरोध पत्र पर विद्यापति भवन लग हमरा आ बटुक भाइकेँ हस्ताक्षर करबाक आग्रह कयल गेल । बटुक भाइ ई कहैत जे भाइ साहेबक आग्रह कोना टारबनि हस्ताक्षर कऽ देलथिन मुदा हम ई कहैत इन्कार कऽ देलियनि जे पहिने हम देखि लेब जे ठीके पोथी प्रकाशित छैक वा नहि । हमर दस्तखत नहि करब बड़का अपराध मानल गेल आ भाइ साहेब 'अन्तिका'क स्तंभमे स्पष्ट रूपें लिखलनि जे जेँ कि शरदू आर्यावर्तमे प्रवासीजीक अन्डरमे काज करैत छथि आ दरमाहा नहियो भेटैत छनि तैयो विरोध-पत्र पर हस्ताक्षर नहि कयलनि । अंतिका पढ़ि आ. जीवकान्त जी फोन कऽ दुःख प्रकट कयलनि जे बिनु दरमाहाक अहाँ पटनामे कोना गुजर करैत छी । भाइ साहेबक ओहि स्तंभक दू टा शब्द 'अन्डर' आ 'दरमाहा' नहि भेटब हमरा बेधि देलक । हमर दुर्गुण 'क्रोध' हमरापर सवार भऽ गेल आ हम एकटा कागज पर भाइ साहेबक विरोध करैत एकटा मजमून लीखि अन्डर नहि वण्डरक विषय शीर्षक दऽ ओकर दस टा फोटोकापी करा विभिन्न लोकमे बाँटि देलिऐक । एक प्रति भाइ साहेब केँ सेहो देलियनि ।

मजमून पढ़ि भाइ साहेबक चेहरा सर्द भऽ उठलनि । एक घंटाक बाद ओ बजलाह-एकरा समय-सालमे किएक नहि छापि दैत छिऐक ? हमर जबाव छल-पत्रिकाक दुरुपयोग करबा लेल ई नहि लिखल गेल अछि अपितु हमहूँ अक्कत तीत, सत्य लीखि ककरो वेपर्द कऽ सकैत छिऐक से देखेबाक मात्र प्रयास अछि । भाइ साहेब जँ रहितथि तँ ओ मजमून एहिठाम प्रस्तुत करितहुँ मुदा आब नहि । भाइ साहेब, भाइ साहेब छलाह ओ अपन चूक मानि लेलनि, हमर मोन सेहो हुनका प्रति पूर्ववत निर्मल भऽ गेल । जेना हम लिखैत छी तहिना कहियो भाइ साहेब सेहो लिखैत छलाह ।

आब ने 'आरंभ' अछि आ ने समय-साल । कैक गोट पत्रिका चलि रहल अछि मुदा सत्य तथ्य पत्रिकामे नहि अबैत अछि । साहित्यिक राजनीति बेस मारूक भेल जा रहल अछि । राजनीतिक क्षेत्रसँ कम नहि घिना रहल अछि साहित्यिक क्षेत्र । आब बुझैत छी जे साहित्यकार लोकनि जतेक ध्यान लिखबा पर नहि दैत छथि ताहिसँ बेसी गोलैसीपर। क्यो कहैत अछि हम फल्ला-फल्लांकें साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया देलियनि तँ क्यो कहैत अछि फल्लांक कलममे दम्मे नहि छनि ओ तँ हम छी जे ओ टिकल छथि । सभसँ तँ आश्चर्य जे जनिक-जनिक नाम एहि तरहक प्रसंगमे उछलैत छनि से ने ओकर खंडन करैत छथि आ ने ओहि व्यक्ति सभक मुँह बन्द करबाक प्रयत्न करैत छथि अपितु एक गुटमे रहि कऽ अपन साहित्यिक श्रेष्ठताक दावा करैत छथि । समय-साल एहन-एहन बिन्दुपर नजरि रखैत छल । आब की, आब तँ दरभंगा, मधुबनी आ सहरसाक साहित्यिक चौपाड़ि अनरसा चाभऽ मे मस्त अछि, कलकत्ता-दिल्ली झिल्ली झारयमे व्यस्त अछि, पटनाक अरिपन, भंगिमा आ लेखक संघ सुप्तावस्थाक कारणे सुस्त अछि आ चेतना समिति धनीक बनि एकसर अलमस्त अछि ।



नोकरी नहि करबाक निर्णय

आर्यावर्त 15 सितम्बर 2002 मे बन्द भऽ गेल आ हम पुनः बेरोजगार (बिनु नोकरीक) भऽ गेलहुँ मुदा ई नहि छल जे हम बेकार भऽ गेलहुँ । लगले हम अपन कारबार (शेखर प्रकाशन) मे लागि गेलहुँ। समय-साल सेहो निरंतर चलि रहल छल अपन चालिमे । आर्यावर्तक बंद होयबाक आ हमर नोकरी छुटबाक असरि हमरा पर अथवा हमर परिवार पर नहिये जकाँ पड़ल । एकर कारण ई छल जे हम अपनाकेँ सम्हारि लेने रही पूर्वक गलती सभसँ ।

हँ, आर्यावर्तसँ हटलाक बाद ई निर्णय कऽ लेलहुँ जे आब जीवन-पर्यन्त नोकरी नहि करब । कैक अवसरपर पटनाक स्थानीय अखबार सभसँ किछु 'हिन्ट्स' भेटल जाहिसँ हम ओतऽ नोकरी कऽ सकैत छलहुँ मुदा आब हमरा ओहन पत्रकारिता करबाक सख नहि छल जतऽ अनकर दोषकेँ, दुर्गुणकेँ उघार करबामे बहादुरी बुझाइत छैक मुदा जाहि संस्थामे काज करू अथवा जाहि पत्रकारक दलमे रहू तकर दोष, दुर्गुणक विषयमे किछु नहि कऽ सकू, कतहु विरोधमे स्वर उठयबामे सहयोग नहि पाबि सकू । आइ आर्यावर्त पत्र समूहक चारि सय कर्मचारीक करोड़ो टाका डूबि गेलैक मुदा कोनो अखबार अथवा पत्रकार समूह कहियो चौक-चौराहापर निकलि विरोधक स्वर नहि उठौलक, की हम फेर ओही वर्गमे जाकऽ मुंहपर जाबी लगाकऽ नोकरी करितहुँ । एहन काज तँ अग्निपुष्प सन-सन पत्रकार कऽ सकैत छलाह जे आर्यावर्तमे हाथि कटबाक धमकी भरल स्वर निकालथि आ जागरणमे नांगरि सुटकाकऽ सेवानिवृति धरि काज कयलनि ।

आब हम पूर्ण स्वतंत्र भऽ गेल रहीं अपन हाथ जगन्नाथ भऽ गेल छल । घरेमे प्रेस चलैत छल जकरा आगाँ बढ़यबाक निश्चय कयलहुँ । एहि समयमे हमरा प्रेसमे लगभग सात-आठ आदमी काज करैत छल ।

लगभग 25-30 तीस टा स्कूलक काजक अतिरिक्त किताबी काज बढ़िया चलैत छल मुदा एहीठाम फेर एकटा बड़का ब्रेक लागि गेल । कम्प्यूटर तकनीक छपाई व्यवस्थापर अधिकार करय लागल । बेसी लोक कम्प्यूटर द्वारा कम्पोज कयल काजक मांग करय लागल ।

हम फेर एक बेर लड़खड़ाय लगलहुँ मुदा ई नहि छल जे काज नहि भेटय । हँ, काजक उड़ानपर ब्रेक लागय लागल । गति क्रमशः सुस्त होइत गेल । एही बीचमे एकटा 40 पृष्ठक किताब छापय लेल भेटल । मुदा शिवकुमार ठाकुर (प्रेसक मैनेजर सह कम्पोजीटर) टल्ली देबऽ लागल छलाह । 11 वर्ष जीवन हमरा संग बितौलाक बाद, मैथिलक बीच हमर आदमीक रूपमे पहचान बनलाक बाद हमरे संग किछु एहन काज कयलनि जे बड़ दुःख भेल । एकाएक एक दिन प्रेसमे राखल टाइपकेँ उलटि देलिऐक आ घोषणा कऽ देलिऐक जे प्रेस बंद कऽ देल जाइछ आइसँ । से ठीके प्रेस बंद कऽ देलिऐक ताही दिनसँ । मुदा काज लेब बन्द नहि कयलहुँ ।

शिव कुमार जी सहित सभ कर्मचारी बेकार भऽ गेल मुदा एकटा जे इमानदार आ विश्वस्त कर्मचारी छल मोहम्मद-नाजिम तकरा रखने रहलहुँ । आब वैह घुमि-घुमि कऽ सभ प्रेससँ काज करा आनय आ एहि तरहें हमर पाटी सभ बनले रहल । शिवकुमार कहलनि जे हम की करब, हारि कऽ फेर हुनका किताब आ समय-साल बेचबाक दायित्व देलियनि। शुरू मे तँ ठीक-ठाक रहलाह मुदा बादमे जेना होइत छैक तहिना भेल। ओ तऽरे तऽरे श्री मोहन भारद्वाज, भाइ साहेब आदि लेखक लोकनिसँ किताब लऽ अपना स्तरसँ बेचय लगलाह । से भेद खुजल पुस्तक मेलामे आ तकर बाद ओ हमरासँ अलग भऽ अपन काज शुरू कयलनि । आब ओ सुखी छथि, सम्पन्न छथि मुदा हम हुनका लेल बाँतर छियनि से बेर-बेर सुनबा आ बुझबामे अबैत अछि । जे-से, ओ कम्पोजिटरसँ मालिक भेलाह-हमरा यैह प्रसन्नता अछि । सभ सुखी होअओ ।

एक बेर पुनः 2005 मे नोकरीक ऑफर भेटल दिल्लीक एकटा अखबारमे 18,000/-मासिक पर मुदा हम परिवार छोड़ि कऽ नहि जायब

से निश्चय छल तेँ नहि गेलहुँ आ अपने कारबारमे लागि गेलहुँ । आ आब तँ नोकरी छुटना कैक वर्ष भऽ गेल आ वयस सेहो नहि रहल जे नोकरी करब ।

नोकरीमे नहि छी तँ एकर लाभो भेल आ घाटा सेहो भेल । आब जेँ कि हम किताबक दोकानपर बैसि अपन प्रकाशनक काज देखैत छी तँ तथाकथित बाबू भैयाक नजरिमे हम दू कौड़ीक लोक छी आ हुनका सभक आगू पाछाँ-पाछाँ किएक नहि डोलैत छियनि ताहि लेल ओ लोकनि अनेक अवसरपर हमरा न्यून देखयबाक प्रयास करैत छथि तँ दोसर दिस विद्यार्थी वर्ग जे यू.पी.ए.सी. क' तैयारी करैत होअय की वी.पी.एस.सी.क अथवा मैथिलीक कोनो पाठ्यक्रमक विद्यार्थी हमर बारह-तेरह वर्षक मेहनति आ अपना प्रति प्रतिबद्धता देखि जे सम्मान दैत छथि से हमरा कोनो नोकरीमे नहि भेटितय । खासकऽ मैथिलीक प्राध्यापक लोकनिक असहयोगक कारणे ओ लोकनि हमरापर जेना विश्वास करैत छथि से हमरा कोनो नोकरीक प्रति जे जिम्मेदारी होइत छैक ताहिसँ बहुतो बेसी जिम्मेदारी बढ़ा देलक अछि आ हमरा लेल कि ककरो लेल गौरवक विषय भऽ सकैत छैक । आजुक युगमे कतेक लखटकिया कमायवला शिक्षककेँ ओ सम्मान नहि भेटैत छनि जे हम एतेक कम समयमे अर्जित कयलहुँ अछि आ तेँ हम ई मानय लागल छी जे अपन हाथ जगन्नाथ किएक कहल जाइत अछि ।

16/9/18



जीवन-युद्धक भूमिका

मनुक्ख जीवनमे युद्धक भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होइत छैक । ओकरा हरदम युद्धक लेल तैयार रहय पड़ैत छैक । क्यो सम्पत्ति लेल लड़ैत अछि, क्यो अधिकार लेल तँ क्यो अपन सम्मान ओ इज्जति लेल लड़ैत अछि । क्यो अन्तर्मुखी भऽ लड़ैत अछि तँ क्यो बहिर्मुखी भऽ । हम अपन आइ धरिक जीवनमे जतेक युद्ध लड़ल छी से कमे लोकक सौभाग्य होयतनि । मुदा एकटा जे हमर अपन अनुभव अछि से बेस महत्वपूर्ण अछि । हम एक बेरमे एकटा मोर्चा नहि कैकटा मोर्चा खोलि कऽ लड़ैत छी मुदा हमरा ओहि वाह्य मोर्चासँ कहियो भय नहि भेल अछि । हम बेसी भयाक्रान्त रहैत छी अपना भीतरक, अपन अन्तरक लड़ाइसँ । एकर कारण ई अछि जे हमर अन्तर सभ दिन युद्ध करयसँ पूर्व आदेश दैत अछि जे पहिने उचित-अनुचितक निर्णय कऽ ली तखन लड़ाइ लड़ी । परिणाम ई होइछ जे हम अपन अन्तरमे पहिने एतेक लड़ि लैत छी जे वाह्य लड़ाइमे भय नहि होइछ । बेटीक विवाह, व्यवसायक ओझरौट, घरहट, मैथिलीक राजनीति, टोलपड़ोसक काज सभ मोर्चा एकै बेर खुलि जाइत अछि मुदा जेँ अपनासँ लड़ाइ ठनने रहैत छी तेँ ईश्वर सभठाम सहायक होइत छथि आ पार भऽ जाइत छी ।

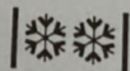
हँ, एकटा बात कहनाइ बिसरि गेलहुँ जे प्रत्येक बेरक एहि प्रकारक युद्धमे क्यो-क्यो ने हमर सहायक भऽ कऽ उपस्थित होइछ जे हम जखन लड़खड़ाइत छी तँ हमरा सम्हरऽमे बेस मदति करैत अछि । बेसी बेर पत्नीक सहयोग-भरोस सम्हारने अछि हमरा एहन सन स्थितिमे जँ ओ सहयोग नहि करितथि तँ हमहू आर्यावर्तक अधिकांश कर्मचारी जकाँ कुहरैत अपन जिनगी हारि गेल रहितहुँ । मित्र दिलीप, अजित आजाद, अभय झा, कालक्रमे सहयोगीक रूपमे आ आदरणीय पं. ताराकान्त झाजी तँ मरनासन्न स्थितिमे मदति कयलनि । मन्त्रेश्वरजी जीविका ठाढ़ करबामे

सहयोग देलनि आ बासुकी बाबूक परामर्श अनेक बेर राहत देलक अछि । आ आब तँ चारू बाल-बच्चा चेतन भऽ गेल अछि जे समय-समय पर हमरा सम्हारैत रहैत अछि । प्रायः यैह सभ सहयोग हमरा उचित-अनुचितक युद्धमे लड़बाक अभ्यासी बना देलक । पहिने सोचैत छलहुँ जे एकटा पड़ाव एहन भेटत जतऽ जाकऽ आरामक अवसर भेटत मुदा मनुष्य जीवन एहन अछि जाहिमे जीवन पर्यन्त, एते धरि जे मृत्युसँ लड़ैत अपन अन्त करैत अछि । तेँ हम आइ धरि विभिन्न प्रकारक समस्यासँ युद्धरते छी, आरामक अवसर नहि भेटैत अछि ।

मैथिली पत्रकारिताक विकास होअय ताहि लेल हम सभ दिन सचेष्ट रहलहुँ अछि । पत्रक माध्यमसँ मैथिल समाजक विकास, विसंगति एवं आवश्यकताक बात होइत रहय से हमर अभिष्ट रहल अछि । एही उदेश्यकेँ लऽ कऽ हम सदैव श्वेत-श्याम दुनू पक्षपर अपन कलम चलबैत रहलहुँ अछि । श्वेत पक्ष सभकेँ नीक लगलनि मुदा श्याम पक्षकेँ उजागर होइते संबंधित पक्ष हमरा खिलाफ मोर्चा खोलैत रहलाह अछि । एहि क्रममे सभसँ पहिल प्रहार होइत अछि हमर व्यवसायपर जे कहुना हम आर्थिक रूपसँ पंगु भऽ जाइ आ हुनकासभ लग शरणागत बनि उपस्थित होइयनि । मुदा से अद्यावधि तँ नहि भऽ सकल अछि आगाँ देखाचाही की होइत अछि । ई हम पूर्वोमे कहि चुकल छी जे हमर गोल, गुट अथवा गिरोह नहि अछि, सभ हमरा लेल आदरणीय छथि मुदा जिनक कार्य-व्यवहार दुष्प्रवृतिसँ प्रभावित भऽ आचरण देखबैत छनि तनिक हम मुद्दा आधारित विरोध करैत छियनि चाहे ओ जे होथि । आ लिखबा काल हम ई कहियो नहि सोचैत छी जे हमर एहिसँ की अहित होयत । अपन संघर्षपूर्ण जीवनमे जतेक कष्ट भोगि चुकल छी ताहि सँ ई भय नहि होइत अछि जे एकर की परिणाम होयत । एक दिन हमर बहुतरास कष्ट, विवशताकेँ देखि कहलनि डॉ. बासुकीनाथ झाजी, शरदू जी रेखा अनेक प्रकारक होइत छैक मुदा सरल रेखा एक्के टा होइत छैक तहिना जीवनमे गोटेक काज सरलतासँ होइत छैक शेष लेल संघर्ष करय पड़ैत छैक । हुनक ई बात जखन-जखन हम संघर्ष करैत रहैत छी तँ

स्मरण भऽ अबैत अछि आ हम पुनः दुगुना शक्तिसँ संघर्ष करबा लेल ठाढ़ भऽ जाइत छी ।

हम बहुत गोटेकेँ देखलियनि अछि जे कोनो प्रकारक पारिवारिक झंझटि, मानसिक क्लेश, कार्यक अधिकता वा कोनो प्रकारक ओझराहटिक स्थिति अबैत बेसम्हार भऽ जाइत छथि । क्यो झगड़ा-झंझटिमे पड़ि जाइत छथि तँ क्यो-क्यो कोनो निशांक व्यसनमे जकड़ि जाइत छथि । जखन कि ने झगड़ा-फसादसँ समस्याक निदान होइछ आ ने निशांक व्यसनसँ । हमर हजारो कि लाखो टका सर-संबंधी अथवा व्यवसायमे कतेको लोक पचा लेलनि मुदा हम स्थिर रहलहुँ । ने कहियो किनकोसँ झगड़ा भेल आ ने ओकर दुःख-वेदनासँ ग्रस्त भऽ हम निशांक सेवन कयलहुँ । हँ, हमर अन्तरक युद्ध एहि सभ परिस्थितिमे चलैत रहल आ सद्मार्गक रास्ता देखबैत रहल । हमर विरोध कयनिहार, हमरा ठकनिहार अथवा ई कही जे डंसनिहार पुनः हमरासँ आँखि मिलयबामे सक्षम नहि भेलाह । कातेसँ निकलि जयबामे अपन भलाइ बुझलनि । मुदा ई साहस नहि भेलनि जे प्रत्यक्ष रूपमे हमर विरोध कऽ सकथि । ईश्वरक कृपा जे ओ हमरा एहन संस्कार नहि देलनि जे कुपथगामीक कारणे कतहु जानल जाइ । अपन द्वन्द्वसँ, अपनासँ अपने युद्ध कऽ कोनहुना आइधरि निमहल जा रहल छी ।



सम्मानक भूख

आइ काल्हि पेटक मूखसँ कनेको कम सम्मानक भूख नहि रहि गेल अछि । जे क्यो कनेको काज करैत अछि, खास कऽ साहित्यिक मैदानमे वा सामाजिक क्षेत्रमे ओ अनेक प्रकारक सम्मान-पुरस्कार पयबा लेल व्यग्र भऽ उठैत अछि । एहन व्यक्ति अपने तँ एहि लेल अनेक प्रकारक पैरबी-पैगाम करिते अछि जे एकटा गोल बनाकऽ एक दोसराकेँ एहि काजमे खूब मदति करैत अछि ।

ई खेल ओना हम 1981 सँ प्रत्यक्ष रूपें देखि रहल छी जे कोना ककरो सम्मान/पुस्कार भेटैत छैक मुदा 1990 अबैत-अबैत ई घृणित रूप लऽ लेलक आ बुद्धिजीवी कहायवला महानुभावसभ तँ एहि खेलमे छुटि कऽ खेलय लगलाह आ जकरा मोन तकरा सम्मानित करबाक होड़ लागि गेल । परिणाम ई भेल जे मैथिलीमे देल जायवला सम्मान असम्मानक नजरिसँ देखल जाय लागल । एहन स्थिति देखि चेतना समिति सभसँ पहिने साकांक्ष भेल आ डॉ. बासुकी नाथ झाजीक नेतृत्वमे एकर परिमार्जन हेतु डेग उठयबाक लेल आगाँ आयल । बासुकी बाबूक किएक ने किएक हमरापर कृपा रहलनि अछि, ओ हमरा एकर भार देलनि आ कहलनि जे चुपचाप एकटा नियमक रूपरेखा बनाउ जे कोन आधारपर चेतना समिति पाँच-छौ गोटेकेँ प्रतिवर्ष सम्मानित कयल करत । लगभग 10 दिनमे हम एकटा प्रारूप बना कऽ देलियनि जाहि अनुसारे (प्रत्येक क्षेत्रक) एकटा मैथिलीक विद्वान, एकटा संस्कृतक विद्वान, एकटा गीत-संगीत नृत्य वा नाटकक विशेषज्ञ, एकटा चित्रकला-मूर्तिकलाक विशिष्ट कलाकार आ एकटा विशिष्ट सामाजसेवीकेँ सम्मानित करबाक अनुशंसा कयल गेल छल । बासुकी बाबूकेँ हमर प्रारूप बेस पसिन्द पड़लनि किएक तँ एहि प्रारूपमे मैथिल समाजक पूरा प्रतिनिधित्व होइत छल । एहिसँ पूर्व कहियो एकछाहा मैथिलीक विद्वान तँ कहियो संस्कृतक आचार्य लोकनिक

बहुलता रहैत छल । समिति द्वारा कनेमने संशोधन कऽ हमर प्रारूप पारित भऽ गेल आ आइ धरि ओही आधारपर विशिष्ट लोकनिकेँ सम्मानित कयल जाइत छनि । जेँ कि आ. भारद्वाजजीकेँ ई बात बूझल भेलनि जे प्रारूप हमरे बनाओल छल तेँ एक दिन हमरा कहिये देलनि-लहैब कऽ देलिऐक अहाँ ।' माने ई जे हुनकर सभक मनमाना पर अंकुश लागि गेलनि तेँ एक वाक्यीय टिप्पणी कऽ चुप भऽ गेलाह । खास कऽ सम्मानक ई रूप देखि चेतना समितिक अध्यक्ष बेस प्रसन्न भेलाह किएक तँ एहि माध्यमे हुनका सभ क्षेत्रक विशिष्ट लोकक साहचर्य भेटबाक अवसर भेटय लगलनि ।

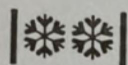
मुदा की चेतनाक एहि डेगसँ सम्मानक भूखल लोकक क्षुधा कम भेलनि । नहि, ई भूख आर बढ़य लागल । गुटपर गुट सक्रिय भऽ गेल। दरभंगा, मधुबनी, पटना, दिल्ली, कलकत्ता आदि स्थानपर सक्रिय मैथिलीक साहित्यकार ओ समाजसेवी आर बेसी खुलि कऽ गुटबंदी करय लगलाह। जेना राजनीतिमे होइछ, तहिना मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे सम्मानाभिलाषी लोक फेर दरभंगा, दिल्ली, पटना आदिमे कैक फाँकमे बंटि गेल । एहन स्थितिमे जे होयबाक चाही सैह भेल । दरभंगाक हड़ाही पोखरिक उतरबरिया महारपर सम्मानक थोक व्यवस्था होअय लागल, समस्तीपुरक विश्रामगृहमे टिकट घर जकाँ पतियानी लगाकऽ सम्मान बाँटल जाय लागल मुदा ई भूख कम होयबाक अपेक्षा आर बढ़ि गेल । परिणाम ई भेल जे एहि कोटिक सम्मानित लोकसभ साहित्य अकादेमी पर पुरस्कार पयबा लेल चढ़ाइ करय लागल । ई देखि आ. मार्कण्डेय प्रवासी एकबेर लिखलनि-साहित्य अकादमी पुरस्कार राशनकार्ड पर भेटयवला सामग्री नहि थिक जे सभकेँ भेटबाके चाही ।'

हमरा ई सभ खेल देखबाक, भोगबाक आ बुझबाक अनेक अवसर एहि कारणे भेटल जे मैथिलीक नामीसँ नामी आ 'क ट ग' क लिखयवला बनौआ साहित्यकार अपन-अपन पैरवी लेल फोन करथि वा स्वयं कहल करथि । एहि स्पर्धामे हारि कऽ एहनो लोक शामिल भऽ गेलाह जिनक योग्यताक आगाँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार तुच्छे नहि,

किछु नहि अछि । मुदा किएक ने जानि सम्मानक ठप्पा लगयबा लेल ओहो लोकनि आतुर भऽ जाथि । आदरणीय गोविन्द बाबूक खिस्सा प्राय: लोककेँ बुझले छैक जे पुरस्कार नहि भेटलापर मैथिली बाजब छोड़ि हिन्दीमे बाजल करथि जे 'मैथिली बईमानो की भाषा है'। एही क्रममे हुनके लक्ष्य करैत हम देसकोस' मे 'स्वास्थ्य रक्षा पुरस्कार' एकटा व्यंग्य लिखने रही ।

आब तँ सहजहि सम्मानक भूख ततेक बढ़ि गेल अछि जे जँ ओ लुटबाक वस्तु होइत तँ ओ दिनादानिस लुटबामे हमर साहित्यकार बन्धुकेँ लाज नहि होइतनि ।

20/2/19



मैथिलक अविश्वसनीयता

हमरा स्मरण नहि अछि जे हम अपन एहि व्यावसायिक जीवनमे (1991) सँ एखन धरि किनको लग कोनो काज लेल पैरवी कयने होइयनि वा ई कहने होइयनि जे हमरा काज दियऽ । ओना हमरा काजक कमी कहियो नहि भेल । हमर दिन ठीके सुधरि गेल छल । जेबीमे सदिखन 5000/- टाका रहबे करय । काजक कमी नहि छल, जहिना स्कूलक काज होइक तहिना बैंकक । मैथिली पोथी आ स्मारिका तँ छपितहि रहय। कैकटा मेडिकल फर्मक काज सेहो होअय ।

एक दिन घरमे बैसल प्रूफ पढ़ैत रही । शिवकुमार जी (कम्पोजिटर) आबि कहलनि जे मारूतीसँ एकटा वृद्ध आयल छथि अहाँसँ भेंट करय। बाहर भेलहुँ तँ देखलहुँ जे लगभग 70 वर्षक एकटा वृद्ध गांधी टोपी आ धोती-कुरता पहिरने ठाढ़ छथि । ओ अपन परिचय दैत कहलनि जे हम डालमियानगरसँ आयल छी । हमरा महावीर जीपर केन्द्रित एकटा स्मारिका बहार करबाक अछि, तकर भार अपने लेल जाय । ई कहि ओ एगारह हजार टाका हमरा प्रणाम कऽ हमर पयर पर राखि देलनि । हम अवाक् रही हुनक व्यवहारसँ । कनेक काल बाद कहलियनि - अहाँसँ हम बड़ छोट छी अहाँ एहन व्यवहार कऽ हमरा पापक भागी बना देलहुँ। ओ हमर हाथ पकड़ि एतवे कहलनि - हम राजपूत छी, महावीर जी हमरा सही जगह पठौलनि अछि । आब हुनक काज नीकेना भऽ जेतनि ।' फेर जाइत काल ओ कहलनि जे पोथी लेबऽ हम नहि आयब। ई मैटर सभ अछि, आर अहाँकेँ जे बुझाय से दऽ देबै आ पोथी बान्हि कऽ पठबा देब । शेष टाका हमर बालक अहाँ केँ दऽ देताह । ओ बेटाक रूपमे एक व्यक्तिसँ परिचय करौलनि जे पटनेमे एडीएम रैंकमे कतहु पदस्थापित छलाह । हुनक पोथी समयपर प्रकाशित भऽ गेलनि आ हम सभ टा हुनका पठाइयो देलियनि । ओ 40 दिनक यज्ञ डालमियानगरमे

आयोजित करैत छलाह । पोथी भेटितहि शेष टाका तँ पठाइये देलनि यज्ञ समाप्त भेलाक बाद पांच आदमीक संग अयलाह आ हमरा धोती-कुरता-चद्दरि दऽ सम्मानित कयलनि । कहलनि जे जीवनमे पहिल बेर एहन प्रेस भेटल जतऽ विश्वासक संग विद्वताक सेहो दर्शन भेल । ओ ई कहि चुप भऽ गेलाह । हम हुनका चाय-पानक आग्रह कयलियनि मुदा ओ ग्रहण नहि कयलनि आ एतवे बजलाह जे अहाँक अन्न कोना खायब, पटि नहि होयत । ओ पुनः अयबाक आश्वासन दऽ चलि गेलाह मुदा बादमे पता चलल जे ओ दू चारि मासक अभ्यंतरे इहलोकसँ विदा लऽ लेलनि ।

हमरा बादमे पता चलल जे हमर पता एहि काज हेतु हुनका प्रसिद्ध तांत्रिक श्री बटेश महाराज देने रहथिन । तहिया हम बटेश महाराजक धार्मिक पत्रिका कामाख्या संदेश (मासिक) छपैत रहियनि । ई पत्रिका 17-18 अंक नियमित चलल आ बादमे बंद भऽ गेल । प्रारंभमे महाराजजी अगाउये पाइ दैत छलाह पत्रिका हेतु आ अपने स्वयं प्रूफ रीडिंग आ संपादन करथि । धीरे-धीरे जखन हम काज आगाँ बढ़बैत गेलहुँ तँ ओ हमरासँ काज लेबऽ लगलाह । पहिने परामर्श, तकर बाद संपादन आ बादमे प्रूफ रीडिंग सेहो करबऽ लगलाह । बादक चारि अंकक तँ मैटरक जोगार सेहो हमरे करय पड़ल ।

जेना-जेना ओ हमरासँ काज करबऽ लगलाह तेना-तेना पाइ देबऽमे कोताही शुरू कऽ देलनि । पहिने एक अंकक पाइ बाकी भेल तकर बाद बकियौता तीन अंक धरि पहुँचि गेल । हम तगादा करियनि तँ चुप्पी लाधि देथि । हम पेशोपेशमे रही जे की करी । कारण माता कामाख्याक नामपर ई पत्रिका निकलैत छल आ बटेश महाराजजी स्वयं कामाख्याक बड़ पैघ भक्त । काज छोड़ब तँ कहीं अनिष्ट नहि भऽ जाय से सोचि थतमता जाइ मुदा जखन बकियौता राशि 30 हजारसँ बेसी भऽ गेल तँ महाराजजीक जेठ बालक टुनटुन जीकेँ कहलियनि । ओ सीधा लोक, कहि उठलाह - ओ पिता छथि, अहाँकेँ भैया कहैत छी, हमरा किछु कहल पार नहि लगैए । अहाँकेँ जे उचित बुझाइए सैह करू ।' हम ओहि दिन घर चल अयलहुँ, गुनधुनमे लागल रही ।

एही समयमे आ० जीवकान्तजीक 'तकैत अछि चिड़ै'क कम्पोजिंग चलि रहल छल । हम ओकरे प्रथम प्रूफ पढ़ैत रही तँ कामता बाबू आयल रहथि । ओ जखन महावीरजी पर केन्द्रित स्मारिकाक प्रस्ताव लऽ कऽ अयलाह तँ एकाएक कामाख्या संदेशक निर्णय लेबाक शक्ति संचय कयलहुँ - **'अंजन पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई'** । से महावीर जी हमरा शक्ति प्रदान कयलनि आ कामाख्या संदेशक काज करब बंद कऽ देलहुँ । महाराजजीक दोसर बालक 'बिजली' मैटर लऽ कऽ अयलाह तँ मना कऽ देलियनि संगहि ईहो कहि देलियनि जे आब ई पत्रिका आगाँ नहि निकलि सकत । से ठीके आइ धरि ओ पत्रिका नहिये निकलल दोबारा । हमर अधिकांश टाका डुबिये गेल ।

आइ श्री बटेश महाराज जी छथिहे, हमहूँ छीहे मुदा माता कामाख्या जे एकटा व्यावसायिक सम्बन्ध जोड़ने रहथि से टूटि गेल । यद्यपि हम हुनका पूरा सम्मान दैत छियनि आ ओ सेहो हमरा पूर्ण सम्मान दैत छथि । व्यावसायिक सम्बन्ध टाका-पैसाक अविश्वसनीयताक कारणे टुटि गेल । बटेश महाराजजीकेँ 2008 मे इन्द्रपुरीमे यज्ञ भेल छलैक ताहिमे सादर प्रवचन करबाक हेतु बजौने रहियनि आ यथेष्ट दक्षिणा सेहो देने रहियनि । ओ गदगद छलाह मुदा हमरा संग ओ एकटा गाहकक रूपमे अपन साख नहि राखि सकलाह जखन कि हुनके पठाओल कामता बाबू हमरापर पूर्ण विश्वास कयलनि आ हमहूँ हुनक विश्वासकेँ पूर्ण मर्यादा संग मान रखलियनि । हमहूँ मैथिल आ बटेशो महाराज मैथिल-दू मैथिलक बीच एहन अविश्वसनीयताक दरारि किएक भऽ जाइत छैक ? की एही कारणे मिथिला पछुआयल अछि । की मैथिल सभ दिन आपसमे एहिना अविश्वासक खेल खेलैत रहत ?



तीत लागय वा कड़ू

मैथिल बेसीतर इर्ष्यालु स्वभावक होइत अछि हमरा हिसाबे आ जे से नहि छथि, मंदबुद्धि बूझल जाइत छथि वा हुनकामे मैथिलत्वक जे तत्त्व छैक तकर अभाव रहैत छनि । मैथिलक तात्पर्य हमर सम्पूर्ण मिथिलावासीसँ अछि मात्र मैथिल ब्राह्मणसँ नहि । ई हम एहि कारणे फरिछा रहल छी जे बेसी गोटे मैथिल माने मैथिल ब्राह्मणे टा बुझैत छथि आ तदनुसारे मैथिल शब्दक व्यवहार करैत छथि । जे संयोगसँ इर्ष्यालु नहि छथि अनका बुद्धू बुझि अपन काज सुतारि लैत छथि आ जखन काज निकलि जाइत छनि तँ किछु कहि ससरि जाइत छथि । एहन सन जेना हमही गलती कयलहुँ अछि तेँ आब अहाँकेँ जे होअय से भोगू, हम की कऽ सकैत छी । प्रारंभिक प्रकाशन कालमे एहि तरहक हमरा खूब अनुभव भेल । कतेको लोक पोथी किछु टाका दऽ छपा लेथि । किछु पोथी लऽ जाथि आ शेष पाछाँ लऽ जायब कहि छोड़ि देथि आ शेष टाको नहि देथि । एखनो ताहि समयक पोथी सभ हमरा घरमे एमहरसँ ओमहरा ढ़ेंगरा रहल अछि ।

एही समयमे प्रसिद्ध कवि श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' हमरा ओतऽ एकटा नाटक छपौलनि – उदास गाछक वसंत । बादमे नाटक कयनिहार लोकनि एहि नाटककेँ 'उगाव' नामसँ सम्बोधित करथि । एहि नाटकपर कुल 2675 टाका खर्च भेल रहैक । विनोदजी अग्रिम रूपमे हमरा एगारह सय टाका देलनि । पोथी 'उगाव' छपि गेलनि । मुदा एहि 'उगाव'क एवजमे अग्रिमसँ बेसी एक्को पाइ नहि देलनि से आइ धरि । 200 पोथी लऽ गेलाह आ शेष हमरे लग छोड़ि देलनि । शेष पाइ दऽ तगादा करियनि तँ स्पष्ट किछु नहि कहथि ।

भाइ साहेबकेँ हमर स्थिति बूझल छलनि । बूझल तँ विनोदोजीकेँ छलनि जे हम नोकरी छुटलाक बाद ई व्यवसाय जीविका लेल शुरू

कयने रही, हुनका जकाँ सौखिया लेखन नहि । भाइ साहेब एक दिन चेतना समिति लग विनोदजीकेँ कहलथिन – यौ, शरदूकेँ किताबवला पाइ किएक नहि दऽ दैत छियनि, बड़ कष्टमे छथि, दऽ दियनु जल्दीसँ । ओहि दिन विनोदजी जे उत्तर देने रहथिन से हमरा ओहिना यादे अछि । विनोदजी बाजल रहथि – एगारह सय टाका देने छियनि, आब कते दियनु । लोक दारू पीबि बरबाद करैए, हम किताबपर एगारह सय टाका बरबाद कयलहुँ । आब कतेक करू !' मतलब ई जे विनोदजी हमरा जे एगारह सय टाका देलनि से जेना दारूबाज दारू पीबि बरबाद करैए तहिना ओहो एगारह सय टाका बरबाद कऽ देने रहथि हमरा दऽ कऽ ।

विनोदजी बड़ इमानदार लोक बूझल जाइत छथि, निर्भीक सेहो । मुंह पर ठांइ-पठांहि कहयवला मुदा हुनक ई किरदानी हुनक कोन स्वभावकेँ परिलक्षित करैत अछि सोचनीय थिक । की विनोदजी एही दारूबाजीक नशापर बीस पच्चीस वर्षसँ साहित्य अकादेमी सम्मान पयबा लेल मैदानपर उतरैत छलाह ? की साहित्यकारक यैह बोल आ व्यवहार ओकरा समाजमे सम्मान दियबैत छैक ? की जे व्यक्ति अपन जिनगीमे एहन व्यवहार रखैत अछि से आफिसक कार्यकेँ इमानदारीपूर्वक निष्पादित करैत होयत-ई सभ प्रश्न आइ धरि हमर दिमागकेँ हौड़ैत रहैत अछि आ हमर मोन हमरेसँ बेर-बेर ई पूछैत रहैत अछि जे की एहने-एहने व्यवहारक कारणे आन भाषा-भाषी मैथिलकेँ गहूमन सापक संग तुलना करैत अछि ?

एक व्यक्ति अपन जीविका चलयबा लेल संघर्ष कऽ रहल हो आ दोसर व्यक्ति ओकर पूंजीकेँ खा कऽ बैसि जाय आ स्वयं अपनेकेँ दोषी मानय जे किएक ओकरा किछुओ पाइ दऽ देलिऐक । ई बादमे बादमे पता चलल जे 'दोहा तीन सय दू' आ 'सहरजमीन' सेहो किछु-किछु टाकाक दारू जकाँ बरबाद भेलापर अस्तित्वमे आयल छल आ बदनाम होइत छलाह अरूण आचार्य जे एहि दुनू पोथीकेँ अपना प्रेसमे जन्म देने रहथिन ।

मन्त्रेश्वर झाजी जखन हम प्रेस खोलने रही तँ एक दिन कहने

रहथि जे कतेक नीक होइत जे मैथिलीयोक प्रकाशक होइत आ.ओ स्वयं लेखककें कहैत जे लाउ हम अपन खर्चसँ अहाँक पोथी छापि दैत छी। हुनक सपना पूरा होइनि तें ओ हमरा मदति करयमे लागि गेल छलाह आ बेल्ट्रोनक किछु काज तँ दियेबे कयलनि संगहि अपन पोथी सभ सेहो हमरासँ छपौलनि। श्रीझाक सपना हमरा जनैत दस बारह वर्षमे पूरा कऽ दितियनि मुदा सालमे तीन चारि टा एहन-एहन मैथिल गाहक पाछाँ मुंहे ठेलि देथि आ हमरा घाटाक सामना करय पड़य। मुदा नीको गाहकक शुभकामना आ सहयोग हमरा संग रहल।

मैथिली लेखक संघ जखन अपन प्रथम साहित्योत्सवक आयोजन कऽ रहल छल तँ विनोदजी हमरा पकड़ि कऽ कहलनि जे हमरा लग तीन टा पोथी प्रकाशनक प्रोजेक्ट अछि मुदा अहाँ बैसबे नहि करैत छी जे गप्प करी अहाँसँ। हम 'हँ-हूँ' किछु नहि कहि बात टारि देलियनि। मोनमे भेल जे फेर ने ओ दारू पीबि अपन टाका बरबाद कऽ लेथि। प्राय: तें ने पक्षमे रहने ने विपक्षमे गेने 'अपक्ष' धारि लेलकनि आ ओ मोक्ष प्राप्त कऽ लेलनि।

ओना मैथिल जँ विश्वासपूर्वक क्रेता आ विक्रेताक रूपमे एक दोसरासँ जुड़य तँ बहुत काज सहजहि कयल जा सकैछ। थोड़ेक दिन तँ मैथिल संग चलैछ मुदा लगले हरिमोहन बाबूक झा-झा झाझा बनिकऽ रहि जाइछ आ गाड़ी लसकि जाइछ। हँ, हम 19 वर्षक एहि व्यवसायिक जीवनक उठापटकसँ एखन धरि हारि नहि मानलहुँ अछि आ मैथिलकें अपनामे एक भऽ काज करबा लेल कहैत आबि रहल छियनि। भऽ सकैछ बहुत गोटे कें हमर बात तीत लगैत होइन, कड़ू लगैत होइन मुदा जावत एहि बिन्दुपर नहि सोचल जायत तावत जे एहन-एहन महानुभव लोकनि सम्मान-पुरस्कार पाबि रहल छथि तनिका सामान्य जन आदरक दृष्टिसँ नहि देखतनि ओ भने अपना मोने सम्मानित होइत बुझल करथु।

2/5/2015



शरदिन्दु चौधरी

जन्म	:	7-10-1956, मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार
माता	:	स्वर्गीय मोती देवी
पिता	:	पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी
शिक्षा	:	एम.ए. राजनीतिशास्त्र, पटना, विश्वविद्यालय, पटना-1, एल.एल.बी., मगध विश्वविद्यालय, गया
वृत्ति	:	पत्रकारिता 1981-84, मिथिला मिहिर, साप्ताहिक 1984-86 मिथिला मिहिर, दैनिक 1987-89 मिथिला मिहिर, मासिक 1995-2002 आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक (फीचर सम्पादक) समय-साल, मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक 2000सँ 2014। पूर्वोत्तर मैथिल, गुवाहाटी, सम्पादक, 2015-16
सम्प्रति	:	शेखर प्रकाशन (मुद्रक, प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)क व्यवस्थापक - संचालक ।
प्रकाशित कृति	:	✤ जँ हम जनितहुँ ✤ बड़ अजगुत देखल ✤ गोबरगणेश ✤ करिया कक्काक कोरामिन (व्यंग्य संग्रह) ✤ बात-बातपर बात (संस्मरणात्मक निबंध) ।
सम्पादन	:	मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा ✤ साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी ✤ विद्यापति गीतिका (दू भाग) ✤ मैथिली गद्य गौरव ✤ अभिमत (हिन्दी) । 20 सँ बेसी स्मारिकाक संपादन । आकाशवाणी, दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता प्रसारित एवं हिन्दी दैनिक तथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित ।

सम्पर्क

2A/29, टेक्स्ट बुक कालोनी, इन्द्रपुरी, पटना-24

मो.- : 09334102305, 7561944783

E-mail : choudharyshardindu11@gmail.com

शेखर प्रकाशन, पटना-24

ISBN : 978-81-940269-1-4